आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड

अवनि-प्रवाह

अंक: 02 वर्ष :2023-24

WEBSITE @avnl.co.in

FACEBOOK @official.avani.pr

TWITTER @avani_pr

एवीएनएल

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड

ARMOURED VEHICLES
AVANI
सर्वाः प्रदिशो जयेम

रक्षा विनिर्माण के क्षेत्र में एक नई सुबह की शुरुआत करता है

दृष्टि

लक्ष्य

दृष्टि

एक विश्वस्तरीय कवच वाहनों (आर्मर्ड व्हीकल्स) के निर्माता और घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय ग्राहकों के लिए एक विश्वसनीय वैश्विक ब्रांड बनने का सतत प्रयास करना।

मूल्य

- अटूट सत्यनिष्ठा
- स्वयं को उच्चतम मानकों की कसौटी पररखना
- सृजनात्मकता एवं नवाचार
- ग्राहक केद्रित
- स्वामित्व, उत्तरदायित्व एवं जवाबदेही
- मितव्ययिता - कम से अधिक हासिल करना
- अटल गुणवत्ता
- समय पर परिणामों की प्राप्ति

लक्ष्य

- रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत अभियान और मेक इन इंडिया पहल का प्रमुख संरक्षक बनना।
- हमारी रक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसियों के सबसे विश्वसनीय एवं पसंदीदा भागीदार के रूप में घरेलू बाजार में नेतृत्व स्थापित करना तथा उसे बनाए रखते हुए समूह को एक अंतरराष्ट्रीय श्रेणी के रक्षा समूह के रूप में विकसित करना।
- बेहतर मूल्य प्रदान करके और सभी हितधारकों की अपेक्षानुसार ब्रांड 'अवनि' को बनाना और मजबूत करना।
- हमारे मौजूदा और संभावित ग्राहकों के लिए सैन्य गतिशीलता के क्षेत्र में अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी एवं इंजीनियरिंग समाधानों की एकीकृत प्रणाली होना।
- रचनात्मकता एवं नवाचार के लिए प्रतिबद्ध वैश्विक दक्षताओं का एक शिक्षण संगठन बनना।

केवल प्रतिबंधित वितरण हेतु

अवनि-प्रवाह

अंक: 02 **वर्ष: 2023-24**

मुख्य संरक्षक

श्री संजय द्विवेदी

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री बि. पट्नायक, निदेशक/मा.सं.

मुख्य संपादक

श्री रंजन कुमार बल, महाप्रबंधक/नि.का. एवं मा.सं.

संपादक मंडल

श्री विपुल बाजपेई, सहा.का.प्र.

श्रीमती गीता पार्थसारथी, अनुभाग प्रमुख/राजभाषा

श्री आर.एन. अनन्तपद्मनाभन, क.अ.अ.

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड, चेन्नई-600054

अध्यक्ष

श्री संजय द्विवेदी
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

उपाध्यक्ष

श्री सी. रामचंद्रन, निदेशक/वित्त
श्री बि. पट्नायक, निदेशक/मा.सं.

राजभाषा अधिकारी

श्री रंजन कुमार बल, महाप्रबंधक

सचिव

श्री विपुल बाजपेई, सहायक कार्य प्रबंधक

सदस्यगण

श्री एम. सिवकुमार, महाप्रबंधक
श्री बी. जीवा, कार्य प्रबंधक
श्री वी.के. मीणा, कार्य प्रबंधक
श्री सीएच. नरसिंह राव, कार्य प्रबंधक
श्री मुनीश कुमार, कनिष्ठ कार्य प्रबंधक
श्रीमती गीता पार्थसारथी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री आर.एन. अनन्त पद्मनाभन, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

एमबीटी अर्जुन एम.के-II

बलों का

संबल

एवीएनएल सात नए रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों में से एक है। 14 अगस्त 2021 को निगमित एवं मुख्यालय आवडी (चेन्नई) में है।

यह कवच/लड़ाकू वाहनों, जैसे टी-72 (अजेय), टी-90 (भीष्म), एमबीटी अर्जुन, इन्फैंट्री कॉम्बैट वाहन 'बीएमपी-द्वितीय सारथ', सहायक वाहन (एमपीवी, एईआरवी आदि) के उत्पादन में शामिल है।) और रक्षा गतिशीलता समाधान (स्टैलियन, एलपीटीए आदि)। एवीएनएल वर्तमान बाजार अग्रणी है और सशस्त्र बलों की आवश्यकताओं को पूरा करने की विशेषज्ञता और क्षमताओं के साथ भारत में कवच और लड़ाकू वाहनों के क्षेत्र में इसका एकाधिकार है।

रक्षा विनिर्माण केंद्र

इसमें निम्नलिखित 05 घटक उत्पादन इकाइयाँ (तत्कालीन आयुध निर्माणियाँ) हैं।

- भारी वाहन निर्माणी (एचवीएफ), आवडी, चेन्नई
- इंजिन निर्माणी, आवडी (ईएफए), चेन्नई
- वाहन निर्माणी, जबलपुर (वीएफजे)
- आयुध निर्माणी मेदक (ओएफएमके), हैदराबाद
- मशीन टूल प्रोटोटाइप निर्माणी (एमटीपीएफ), अंबरनाथ, मुंबई।

एवीएनएल कवच/लड़ाकू वाहनों, जैसे टी-72 (अजेय), टी-90 (भीष्म), एमबीटी अर्जुन, इन्फैंट्री कॉम्बैट वाहन 'बीएमपी-II सारथ', सहायक वाहन (एमपीवी, एईआरवी आदि) तथा रक्षा गतिशीलता समाधान (स्टैलियन, एलपीटीए आदि) के उत्पादन में शामिल है।

संजय द्विवेदी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के उद्गार

अत्यधिक खुशी की बात है कि आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में राजभाषा वार्षिक पत्रिका ''अवनि-प्रवाह'' के द्वितीयांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिन्दी भारत की सबसे अधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है। यह एक उन्नत, समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा है। आज की आवश्यकता है कि हिन्दी को सरलतम रूप में अपनाकर कार्यालयीन कार्यों में इसका अधिकाधिक प्रयोग किया जाए। संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा आदेशों का अनुपालन कर अपना कार्य व्यवहार हिन्दी में करें। राजभाषा हिन्दी में कार्य व्यवहार से हम न केवल अपना कर्तव्य को निभाते हैं बल्कि अपने देश का गौरव भी बढ़ाते हैं।

'ग' क्षेत्र में स्थित आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड द्वारा वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' के द्वितीयांक का त्रिभाषी रूप में प्रकाशन सराहनीय है। मैं कामना करता हूँ कि पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' का द्वितीयांक विभिन्न प्रकार की रोचक एवं ज्ञानवर्धक रचनाओं से पाठकों का चित्त आकर्षित करे।

मैं पत्रिका "अवनि-प्रवाह" के निरंतर एवं इस अंक के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं देता हूँ।

सी. रामचंद्रन, निदेशक/वित्त

निदेशक/वित्त का संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में राजभाषा वार्षिक पत्रिका ''अवनि-प्रवाह'' का द्वितीयांक प्रकाशित हो रहा है।

हिन्दी को हमारे देश के संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है। यह हमारे देश की अखंडता एवं एकता का प्रतीक है। आर्थिक उदारीकारण एवं वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी का महत्व समय के साथ बढ़ता जा रहा है। पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण बनाता है।

मुझे विश्वास है कि वार्षिक पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

बि. पट्नायक, निदेशक/मा.सं.

उपाध्यक्ष की लेखनी से

हिन्दी हमारी राजभाषा है। हिन्दी आज न केवल राज-काज की भाषा है वरन् तकनीकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा बन गई है। आजकल भाषा और विकास दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू बन गए हैं। हम कार्यालयीन कार्य के अलावा तकनीकी क्षेत्र में भी राजभाषा का प्रयोग करते हैं।

मुझे ज्ञात है कि मुख्यालय की इंटरनेट वेबसाइट द्विभाषी रूप में बनाई गई है। इंट्रानेट वेबसाइट भी हिन्दी और अंग्रेजी मे उपलब्ध है। मैं चाहता हूँ कि राजभाषा कार्यान्वयन में सूचना प्रौद्योगिकी का यथासाध्य प्रयोग किया जाए ताकि अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजाभाषा हिन्दी में काम करने में सुविधाजनक हो।

यह प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' के प्रवेशांक को नगर राजभाषा कार्योन्वयन समिति (उपक्रम), चेन्नई द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। अब पत्रिका के द्वितीयांक का प्रकाशन किया जाने वाला है। पत्रिका के लिए रचनाएं दे कर इसके सफल प्रकाशन के लिए योगदान देने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई।

मैं विश्वास करता हूँ कि पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' का यह अंक विभिन्न रचनाओं से परिमलित हो कर वाचकों के मन को लुभाने में समर्थ होगा। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

एम. सिवकुमार, महाप्रबंधक/नि.का. एवं मा. सं.

महाप्रबंधक/नि.का. एवं मा. सं. के विचार

हम सब जानते हैं कि हम हिन्दीतर भाषी क्षेत्र में काम करते हैं। हमारा कार्यालय 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत आता है। हिन्दी जनभाषा एवं सरल और सुबोध भाषा है। भारत के अधिकांश राज्यों में हिन्दी जनभाषा है। अन्य प्रांतों में हिन्दी यद्यपि जनभाषा नहीं है तो भी समझी जाती है। यही कारण है कि हिन्दी हमारे संविधान सभा द्वारा राजभाषा घोषित की गई।

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में मीडिया ने वैश्विक क्रांति की है। हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों में आम जनता भी हिन्दी भाषा में प्रसारित रामायण, महाभारत आदि पौराणिक सीरियल बड़े शौक से देखते हैं। हिन्दी में प्रसारित विज्ञापन बच्चों के जी को खूब लुभाते हैं। इससे बच्चे-बूढ़े सभी में हिन्दी सीखने की ललक पैदा होती है। इसी प्रकार हिन्दी फिल्में भारत के हर कोने में देखी और पसंद की जाती हैं। विदेशों में भी हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ रही है।

हिन्दी की मौखिक एवं लिखित भाषा एक ही है। हिन्दी जैसे बोली जाती है वैसे ही लिखी भी जाती है। मेरी राय में शायद हिन्दी की उक्त विशेषताओं ने ही इस मुख्यालय के कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रेरित किया हों। मुख्यालय के लगभग सभी अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशिक्षित हैं और हिन्दी में काम करने में सक्षम हैं। यहाँ पर गृह मंत्रालय एवं रक्षा उत्पादन विभाग द्वारा समय-समय पर जारी अनुदेशों का अनुपालन कर राजभाषा का कार्यान्वयन किया जाता है।

प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में वार्षिक पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' के द्वितीयांक का प्रकाशन किया जा रहा है। मैंने पाया कि पत्रिका के इस अंक में विभिन्न विषयों पर रचनाएं एकत्रित की गई हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल अवश्य ही बधाई के पात्र हैं। मैं पत्रिका के निरन्तर प्रकाशन की कामना करता हूँ।

रंजन कुमार बल, महाप्रबंधक/नि.का. एवं मा.सं.

राजभाषा अधिकारी के विचारों में............

हमारा देश बहुभाषी देश है। अगर हम विश्व के दूसरे देशों को देखें और परखें तो हमें यह मालूम होगा कि उन सभी देशों में एक ही भाषा में उनका कार्य व्यवहार होता है। एक ही उनकी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा एवं जनभाषा की भूमिका निभाती है। भारत बहुभाषी देश होने के कारण यहाँ पर राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा की आवश्यकता पड़ रही है। केन्द्र सरकार के कार्यालयों द्वारा किसी भी राज्य सरकार के साथ पत्र व्यवहार करने के लिए या किसी भी राज्य सरकार को दूसरे राज्य सरकारों के साथ अथवा केन्द्र के साथ पत्र व्यवहार करने के लिए राजभाषा की आवश्यकता है। वरना केन्द्र सरकार एवं सभी राज्य सरकारों के कार्यालयों में सभी भाषाओं के अनुवादकों की नियुक्ति करनी पडेगी। इस संकट से बचने तथा विश्व के अन्य देशों की तरह एक ही भाषा में पत्र व्यवहार करने के उद्देश्य से ही हमारे संविधान द्वारा राजभाषा का चयन किया गया। हमारे संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में चुना क्योंकि यह उस समय और आज भी देश की अधिकांश जनसंख्या द्वारा बोली जाती है। यह सरल एवं सहज भाषा है। देश के सभी प्रांतों के लोग इसे समझते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति तक केवल अंग्रेजी ही सरकार के कामकाज की भाषा रही थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के अपने राष्ट्र चिन्ह एवं प्रतीक बनाए गए जैसे राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय झंडा, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय जानवर आदि। इसी क्रम में राष्ट्र भाषा के रूप में एक भाषा का चयन अवश्य था। राष्ट्रभाषा के चयन में सभी राज्यों की सहमति चाहिए जोकि आज तक नहीं मिली है। लेकिन हिन्दी राजकाज के कार्यों के लिए राजभाषा घोषित की गई है। केन्द्र सरकार में कार्यरत कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करना अनिवार्य है। राजभाषा को कार्यान्वित करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग हर साल वार्षिक कार्यक्रम तय करता है। गृह समाचार पत्र एवं वार्षिक पत्रिकाओं का प्रकाशन इसी वार्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत आता है। इस मुख्यालय द्वारा त्रैमासिक गृह समाचार पत्र 'अवनि- समाचार' एवं वार्षिक पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' का प्रकाशन नियमित रूप से किया जा रहा है।हम वार्षिक पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' के द्वितीयांक को सानंद आपके कर-कमलों तक पहुँचा रहे हैं। मैं सभी पाठकों से आग्रह करता हूँ कि वे इस पत्रिका को पढ़ कर पत्रिका की खूबियों एवं कमियों से अवश्य हमें अवगत कराएं। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से योगदान देने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई। पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

विपुल बाजपेई, सहायक कार्य प्रबंधक एवं सचिव रा.का.स.

सचिव/रा.का.स. के विचार

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड के मुख्यालय में राजभाषा हिन्दी का अच्छा माहौल है। गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा पत्राचार, नोटिंग आदि के लिए निर्धारित लक्ष्य इस मुख्यालय द्वारा हासिल कर लिया गया है। यहाँ पर धारा 3 (3) का अनुपालन किया जा रहा है। त्रैमासिक समाचार पत्र एवं वार्षिक पत्रिका का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त एवीएनएल वेब पोर्टल विकसित किया गया है। इस वेब पोर्टल में लगभग सभी प्रपत्र द्विभाषी रूप में उपलब्ध कराए गए हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में मुख्यालय का प्रतिनिधित्व किया जा रहा है। नराकास द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में भी कर्मचारियों को प्रोत्साहित कर भेजा जा रहा है। हाल ही में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित 12वीं बैठक में एवीएनएल निगम कार्यालय की वार्षिक राजभाषा पत्रिका ''अवनि-प्रवाह'' के प्रवेशांक को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

यह वार्षिक राजभाषा पत्रिका ''अवनि-प्रवाह'' का द्वितीयांक है। इस मुख्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विचारों को मूर्त रूप देने में यह पत्रिका सार्थक भूमिका निभा रही है। इस अंक में पत्रिका के लिए निर्धारित सरकारी अनुदेशों के अनुपालन में विभिन्न विषयक रचनाएं शामिल की गई हैं। मैं सभी से यही आग्रह करता हूँ कि भविष्य में भी ऐसे ही सहयोग देते रहें।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल को इसके सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ और पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

मेरा भारत महान

- श्रीमती गीता पार्थसारथी
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

महान देश है हमारा
वसंत देश है हमारा
सुसंस्कृत देश है हमारा
विश्व विख्यात देश है हमारा

है यह शिक्षा के लिए प्रसिद्ध देश
है यह उद्योगों के लिए श्रेष्ठ देश
है यह कृषि प्रधान देश
है यह परिश्रम करने वालों का देश

वीर जवानों से रक्षित देश है यह
चुनौतियों का सामना करने वाला देश है यह
कार्य सिद्धि का लक्ष्य रखने वाला देश है यह
लक्ष्य सिद्धि का निशाना साधने वाला देश है

है यह संतों की तपो भूमि
है यह झांसी रानी की वीर भूमि
है यह कलाम की कर्म भूमि
है यह मदर टेरेसा की सेवा भूमि

है यह विदेशियों को आकृष्ट करने वाला देश
है यह अंतरिक्ष-विज्ञान में कुशलता प्राप्त देश
है यह विभिन्न कलाकारों का विशिष्ट देश
है यह वर्ष भर फूलों से रंगने वाला देश

गर्व है हमें अपनी मातृभूमि पर
गर्व है हमें अपने मजबूत संविधान पर
गर्व है हमें अपनी प्राकृतिक संपदाओं पर
गर्व है हमें इस पुण्य भूमि में जन्म लेने पर

महान् देश है हमारा
वसंत देश है हमारा
सुसंस्कृत देश है हमारा
विश्व विख्यात देश है हमारा

संपादकीय..........

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल – भारतेंदु हरीशचंद्र

भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी है और इसे राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा दिया गया था। अत: प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। करीब 11वीं शताब्दी से हमारे देश में आपसी संपर्क, संवाद-संचार, विचार-विमर्श, जीवन-व्यवहार का माध्यम हिन्दी ही रही है। चाहे वह पत्रकारिता का, स्वाधीनता संग्राम का क्षेत्र क्यों न हो सर्वत्र हिन्दी ही जनता के विचार-विनिमय का साधन बनी है।

अतीत के महापुरुषों जैसे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, स्वामी दयानन्द सरस्वती,

महात्मा गाँधी जैसे नेताओं ने हिन्दी के माध्यम से ही संपूर्ण राष्ट्र से संपर्क किया और सफलता हासिल की। इसी कारण आजादी के पश्चात संविधान-सभा द्वारा बहुमत से 'हिन्दी' को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय किया गया था।

भाषा का विस्तार क्षेत्र जैसे जैसे बढ़ता जाता है वह भाषा उतने ही अलग अलग रूप में विकसित होना शुरू हो जाती है, यही हाल हिंदी भाषा के साथ हुआ। यह भाषा पहले केवल बोलचाल की भाषा में ही सीमित थी। उसके बाद साहित्यिक भाषा के रूप में इसका विकास हुआ। फिर समाचार-पत्रों में 'पत्रकारिता हिन्दी' का विकास हुआ और 'खेलकूद की हिन्दी', 'बाज़ार की हिन्दी' और तकनीकी हिंदी भी सामने आई।

अत: अपने लगातार विकास के कारण स्वतन्त्रता के बाद हिन्दी, भारत की राजभाषा घोषित की गई तथा उसका प्रयोग कार्यालयों में होने लगा और राजभाषा के रूप में विकसित हो गया। कोई भी भाषा को राजभाषा का दर्जा प्राप्त करने के लिए भाषा का आसान एवं सरल होना आवश्यक है। साथ ही उस भाषा को बोलने वालों की संख्या अधिक होनी चाहिए। हिन्दी में पाए गए इन लक्षणों के कारण ही हिन्दी राजभाषा घोषित की गई। हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान बनाते समय ही राजभाषा से संबंधित नियम बनाए हैं। इसलिए केन्द्र सरकार के कर्मचारी होने के नाते हिन्दी में कार्य व्यवहार करना हम सबका संवैधानिक दायित्व है।

राजभाषा हिन्दी में कार्य व्यवहार को आगे बढ़ाने हेतु गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने कार्यक्रम तय करके परिचालित किया है। राजभाषा पत्र-पत्रिका का प्रकाशन इसी के अंतर्गत आता है। आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में प्रकाशित वार्षिक पत्रिका ''अवनि-प्रवाह'' के प्रवेशांक को न.रा.का.स. (उपक्रम), चेन्नई द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। यह उपलब्धि सभी रचनाकारों के योगदान से ही संभव हो पाई है जिसके लिए हम सभी रचनाकारों के प्रति आभारी हैं।

अब ''अवनि-प्रवाह'' के द्वितीयांक में गृह मंत्रालय तथा रक्षा उत्पादन विभाग द्वारा वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन के संबंध में निर्धारित विभिन्न मापदंडों को ध्यान में रखते हुए तकनीकी, सामग्री प्रबंधन, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता सेनानी, संरक्षा, पर्यावरण, राजभाषा हिन्दी आदि विभिन्न विषयक रचनाएं एकत्रित कर छपी गई हैं।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री संजय द्विवेदी के संरक्षण, श्री बिश्वरंजन पट्टनायक, निदेशक/मा.सं. के नेतृत्व, श्री रंजन कुमार बल, महाप्रबंधक/नि.का. एवं मा.सं. की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में पत्रिका ''अवनि-प्रवाह'' के द्वितीयांक का प्रकाशन संपन्न हुआ है। हम पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए पूर्ण योगदान देने वाले संपादक मंडल के सभी सदस्यों तथा पत्रिका के सभी रचनाकारों का हार्दिक आभार प्रकट करते हैं और पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वे अपने अमूल्य विचारों से हमें अवगत कराएं ताकि आगामी अंकों को और भी निखारा जा सके।

संपादक मंडल

विषय सूची

'अवनि' नया उदय	19
आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड में राजभाषा के बढ़ते कदम	21
राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3)	22
भीमराव राम जी अंबेड़कर	23
क, ख और ग क्षेत्र	24
राजभाषा नियम, 1976	24
एवीएनएल में संपन्न समारोह - चित्र-दीर्घा	26
भारतीय सेना द्वारा उपयोग किए जाने वाले युद्धक टैंक	32
हँसने का समय	35
भाई-भाई हैं	36
कृत्रिम बुद्धिमत्ता	41
कोलेस्ट्रॉल कम करने की देशी दवा	44
वजन कम करने में सहायक योग	46
समान नागरिक संहिता	48
चैटजीपीटी	50
आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन	52
हिन्दी पखवाड़ा-प्रतियोगिताओं का परिणाम	54
त्रिभाषी कहावतें	55
पर्यावरण संरक्षण	56
स्वच्छता	**58**
A DIVE INTO FOOT HEALTH	**60**
கைதட்டல்	**65**

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड
Armoured Vehicles Nigam Limited

'अवनि'-नया उदय

आजादी के अमृत काल के अमृत महोत्सव में जन्मी 'अवनि' की शुभ शुरुआत हुई है एवं वह एक विश्व स्तरीय कवच वाहन निर्माता एवं आत्मनिर्भर भारत का मजबूत स्तंभ बनने का लक्ष्य रखती है। अवनि विभिन्न कवच वाहनों जैसे युद्धक टैंक, पैदल सेना के लड़ाकू वाहन और उनके वेरिएंट, बारूद संरक्षित वाहन, बुलेट प्रूफ वाहन और सेना बलों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सैन्य वाहनों की विश्व स्तरीय निर्माता है।

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड में राजभाषा के बढ़ते कदम

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड में राजभाषा के बढ़ते कदम

1. राजभाषा वेब पेज:-

इस मुख्यालय के वेब पोर्टल में राजभाषा के लिए अलग से राजभाषा वेब पेज खोला गया है। इस वेब पेज को खोलने पर राजभाषा अनुभाग के सृजन से संबंधित जानकारी, राजभाषा कार्यान्वयन की उपलब्धियाँ, हिन्दी प्रशिक्षण रोस्टर, हिन्दी पुस्तकालय की जानकारी, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों के कार्यवृत्त, समाचार पत्रों के सभी अंक, द्विभाषी प्रपत्र आदि देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी प्रशिक्षण सामग्री, राजभाषा नियमों की जानकारी, राजभाषा उपलब्धियाँ आदि विषय अपलोड किए गए हैं।

2. एवीएनएल वेब पोर्टल:-

कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से एवीएनएल वेब पोर्टल को राजभाषा में आरंभ किया गया है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा कार्यालयीन कार्य हिन्दी में कराने की सुविधार्थ कार्यालयीन एवं प्रशासनिक अभिव्यक्तियाँ द्विभाषी रूप में इस वेब पोर्टल में उपलब्ध कराई गई हैं। कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से समय-समय पर इस वेब पोर्टल में प्रतिदिन ''आज का शब्द'' उसके उच्चारण सहित अपलोड किए जाते हैं। वेब पोर्टल द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों के जन्म दिवस की शुभकामनाएं हिन्दी और अंग्रेजी में दी जाती हैं।

3. राजभाषा कार्यों का कंप्यूटरीकरण एवं पेपरलेस कार्य:-

राजभाषा के लिए अलग से वेब पेज खोले जाने के कारण राजभाषा अनुभाग में पेपरलेस कार्य हो रहा है। रा.का.स. बैठक की सूचना, कार्यसूची, कार्यवृत्त आदि एवीएनएल वेब पोर्टल में अपलोड किए जाते हैं। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक भी मल्टी मीडिया द्वारा आयोजित की जाती है।

4. ज़ेड ड्राइव:-

'ज़ेड ड्राइव' के माध्यम से अनुवाद संबंधी कार्य किया जा रहा है। इससे बिना किसी आंतरिक पत्राचार केवल दूरभाष के माध्यम से अनुवाद संबंधी सभी कार्य किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त सभी द्विभाषी विषय जैसे सभी अधिकारियों के नाम, पदनाम, अनुभाग, सभी माह के नाम, पत्र, फैक्स आदि के नमूने, नोटिंग के नमूने आदि द्विभाषी रूप में उपलब्ध कराए गए हैं। इससे सभी कर्मचारी अपना काम बहुत आसानी से द्विभाषी में कर सकते हैं।

5. वेबसाइट:-

मुख्यालय की इंटरनेट और इंट्रानेट वेबसाइट द्विभाषी में उपलब्ध है।

6. पत्राचार:-

पत्राचार के प्रतिशत को वर्तमान में 74.26 प्रतिशत तक बढ़ाया गया है और पत्राचार का लक्ष्य हासिल कर लिया गया है।

7. नोटिंग:-

'ग' क्षेत्र को नोटिंग के लिए निर्धारित लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है।

8. गृह समाचार पत्र का प्रकाशन:-

मुख्यालय की गतिविधियों को इकाइयों तथा सभी निर्माणियों को अवगत कराने तथा राजभाषा प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से त्रैमासिक गृह समाचार पत्र 'अवनि-समाचार' का प्रकाशन आरंभ किया गया है तथा अब तक इसके 7 अंक नियमित रूप से प्रकाशित किए गए हैं।

9. हिन्दी प्रशिक्षण:-

इस मुख्यालय में प्रशिक्षित अधिकारियों तथा कर्मचारियों का 96 प्रतिशत है। अप्रशिक्षित कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए नामित किया जा रहा है।

10. हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन:-

कर्मचारियों को उनके कार्यालयीन कार्य बेझिझक हिन्दी में कराने के उद्देश्य से हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारियों के लिए हिन्दी कार्यशालाएं प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं।

11. अधिकारियों के लिए विशेष हिन्दी कार्यशाला:-

मुख्यालय में कार्यरत अधिकारियों के लिए विशेष रूप से हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई।

12. हिन्दी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन:-

दिनांक 14.09.2022 से 29.09.2022 तक हिन्दी दिवस/पखवाड़े का आयोजन किया गया था जिस दौरान कर्मचारियों के हिन्दी ज्ञान के अनुसार दो वर्गों में 05 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी। पखवाड़े के समापन समारोह में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को श्री बी. पट्टनायक, निदेशक/मा.सं. के कर-कमलों द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

13. हिन्दी पुस्तकों की खरीद:-

वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान रु. 3987/- की हिन्दी पुस्तकें खरीदी गईं जोकि गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप है।

14. राजभाषा प्रगति पुस्तिका का प्रकाशन :-

दिनांक 21.05.2022 को भारी वाहन निर्माणी, आवडी एवं दि. 11.11.2022 को आ.नि. मेदक में संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षणों के दौरान एवीएनएल निगम कार्यालय द्वारा राजभाषा प्रगति से संबंधित पुस्तिकाएं प्रकाशित की गई थी।

15. वार्षिक रिपोर्ट का द्विभाषा में प्रकाशन:-

एविएनएल की वार्षिक रिपोर्ट पूर्ण रूप से द्विभाषी रूप में प्रकाशित की गई।

16. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें:-

वर्ष 2022-23 के दौरान सभी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में नियमित रूप से आयोजित की गई थी।

17. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति:-

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित बैठकों में मुख्यालय के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। नराकास द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए कर्मचारियों को प्रोत्साहित कर भेजा जाता है।

18. उपलब्धियाँ :-

1. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में हिन्दी गायन प्रतियोगिता में श्रीमती के. गीता, क.का.प्र. संचालन अनभाग को तृतीय पुरत्कार एवं श्री विपुल बाजपेई, सहा.का.प्र. को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

2. इस मुखयालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में प्रकाशित वार्षिक गृह राजभाषा पत्रिका अवनि-प्रवाह के प्रवेशांक को न.रा.का.स. (उपक्रम) के अध्यक्ष, चेन्नई द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3)

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) निम्नलिखित दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी का प्रयोग अनिवार्य है:

Use of Hindi and English for the following documents is compulsory as per Article 3 (3) of Official Language Act, 1963:

HINDI	ENGLISH
संकल्प	Resolution
सामान्य आदेश	General Orders
नियम	Rule
अधिसूचनाएं	Notification
प्रशासनिक रिपोर्ट	Administrative reports
प्रेस विज्ञप्तियाँ	Press communiqué
संसद के समक्ष रखी जाने वाली रिपोर्ट एवं अन्य कागज़ात	Reports and other documents to be placed before the Parliament
संविदाएं	Contracts
करार	Agreements
लाइसेंस	Licence
परमिट	Permits
निविदा सूचना	Tender Notices
निविदा फार्म	Tender forms

सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में तैयार किए जाते हैं, निष्पादित किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं।

All the above documents should be in bilingual and it will be the responsibility of the Officers who are signing these documents to ensure that they are prepared in bilingual and issued.

भीमराव रामजी अंबेडकर

श्रीमती वी. अमुदा, एमटीएस

भारतीय इतिहास को जिन व्यक्तियों ने अपने विचार, संघर्ष और समाजसेवा से बदल दिया है, उनमें से एक नाम है डॉ. भीमराव अंबेडकर, जिन्हें बाबासाहेब के नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म 14 अप्रैल, 1891 को मध्यप्रदेश के मौधा गांव में हुआ था।

अंबेडकर के पूर्वज लंबे वक्त तक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में काम करते थे। उनके पिता भारतीय सेना की मऊ छावनी में सेवा में थे और यहां काम करते हुए वे सूबेदार की पोस्ट तक पहुंचे थे।

अपने भाइयों और बहनों मे केवल अंबेडकर ही स्कूल परीक्षाओं में कामयाब हुए थे। स्कूली पढ़ाई में काबिल होने के बावजूद अंबेडकर और दूसरे बच्चों को स्कूल में अलग बिठाया जाता था। उनको क्लास रूम के अन्दर बैठने की इजाजत नहीं थी। साथ ही प्यास लगने पर कोई ऊंची जाति का शख्स ऊंचाई से पानी उनके हाथों पर पानी डालता था, क्योंकि उनको न तो पानी, न ही पानी के बर्तन को छूने की अनुमति थी।

उनके एक ब्राह्मण अध्यापक महादेव अंबेडकर को उनसे खासा लगाव था। उनके कहने पर ही अंबेडकर ने अपने नाम से सकपाल हटाकर अंबेडकर जोड़ लिया जो उनके गांव के नाम 'अंबावडे' पर था। बाबासाहेब को विशेष रूप से दलित समाज के लोगों के अधिकारों की लड़ाई में अपने योगदान के लिए जाना जाता है। उनके विचारों एवं योगदान का महत्व आज भी समझा जा रहा है एवं उन्हें एक विचारवंत और समाजसेवी के रूप में सम्मानित किया जाता है।

बाबासाहेब के जीवन में संघर्ष का सफर कठिन रहा। उन्हें अपनी बचपन से ही अलगाववाद तथा जातिवाद के खिलाफ़ संघर्ष करना पड़ा। उन्होंने दलितों के अधिकारों के लिए उठाए गए मुद्दों पर अपना जीवन वार्ता नियंत्रित किया। उन्होंने दलितों के लिए उन्नति एवं समानता के लिए लड़ने में अपना पूरा जीवन समर्पित किया।बाबासाहेब का शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष ध्यान था।

उन्होंने अपने अध्ययन के दौरान कई उच्च शिक्षाविद्यालयों से उच्चतम शिक्षा प्राप्त की और विदेश में भी उन्होंने शिक्षा की डिग्री हासिल की। उनका शिक्षा क्षेत्र में इतना दृढ रूप से विश्वास था कि उन्होंने दलित समुदाय के लिए एक विश्वविद्यालय स्थापित करने की भी योजना बनाई। महात्मा गांधी और अन्य कुछ दिग्गज स्वतंत्रता सेनानियों के साथ मिलकर उन्होंने समाज के बिगड़ते हुए हालात को सुधारने के लिए अपने प्रयासों को जारी रखा।

उनके अधिकारों के लिए लड़ने के लिए किए गए संघर्ष के कारण, बाबासाहेब को संविधान निर्माता और भारतीय संविधान के प्रधान लेखक के रूप में अपनी महानता का सम्मान किया जाता है। भारतीय संविधान उनके विचारों, विशेषतः सामाजिक और आर्थिक समानता, समाज में समावेशीकरण, और मित्रता के सिद्धांतों पर आधारित है।बाबासाहेब के समाज सेवा में उनके योगदान ने दलित समाज को अधिकारों और समानता के लिए लड़ने की जंग में सशक्त बना दिया। उन्होंने अनेक संगठनों की स्थापना की और दलित समाज के लिए अनेक योजनाओं को अमल में लाने का प्रयास किया। उनकी योजनाओं में शिक्षा, रोजगार, आवास, और आर्थिक उन्नति के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

बाबासाहेब अंबेडकर के योगदान और विचारों को समझकर हम अपने समाज में समानता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा दे सकते हैं। उनके जीवन को समझकर हम विभाजनों को दूर कर सकते हैं और एक समृद्ध और समान समाज का निर्माण कर सकते हैं। बाबासाहेब अंबेडकर एक महान विचारक, समाजसेवी, और देशभक्त थे, जिनका समर्थन और सम्मान आज भी सभी भारतीयों द्वारा किया जा रहा है।

क, ख और ग क्षेत्र
Regions 'A', 'B' and 'C"

क्षेत्र 'क':
बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र।

"Region A" means the States of Bihar, Haryana, Himachal Pradesh, Madhya Pradesh, Chhattisgarh, Jharkhand, Uttarakhand, Rajasthan and Uttar Pradesh and the Union Territories of Delhi and Andaman and Nicobar Islands;

क्षेत्र 'ख':
गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।

"Region B" : Gujarat, Maharashtra and Punjab and the Union Territory of Chandigarh, Daman
and Diu and Dadra and Nagar Haveli ;

क्षेत्र 'ग':
खंड (क) और (ख) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा तथा संघ राज्य क्षेत्र।

"Region C" : The States and the Union Territories other than those referred to in clauses (f) and (g);

राजभाषा नियम, 1976
OFFICIAL LANGUAGE ACT, 1976

1. नियम / Rule : 5
हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर: राजभाषा अधिनियम, 1976 के नियम 5 में उल्लिखित है कि हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे।

Replies to communications received in Hindi -
Communications from a Central Government Office in reply to communications in Hindi shall be in Hindi as per Rule 5 of Official Language Act, 1976.

2. नियम / Rule : 6
नियम 6 में उल्लिखित अनुसार अधिनियम की धारा 3 की उपधारा 3 में बताए गए सभी दस्तावेज हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में साथ-साथ निकाले जाएंगे और इसका उत्तरदायित्व इन दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी का होगा।

Both Hindi and English shall be used for all documents referred to in sub-section(3) Section 3 of the Act and it shall be the responsibility of the persons signing such documents to ensure that such documents are made, executed or issued both in Hindi and in English.

3. नियम / Rule :7
कर्मचारी कोई भी आवेदन, अपील या अभिवेदन हिन्दी में या अंग्रेजी में दे सकता है। जब आवेदन हिन्दी में दिया जाता है या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किया जाता है तब उसका उत्तर भी हिन्दी में देना अनिवार्य है।

An employee may submit an application, appeal or representation in Hindi or in English.

(i) Any application, appeal or representation referred to in sub-rule (1) when or signed in Hindi, shall be replied to in Hindi.

(ii) Where an employee desires any order or notice relating to service matters (including disciplinary proceedings) required to be Hindi, or the case may be, in English, it shall be given to him in that language without delay.

4. नियम / Rule : 8
कर्मचारी फाइल में नोटिंग हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है और उससे, दूसरी भाषा में उसका अनुवाद नहीं मांगा जाएगा।

जिस कर्मचारी को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है, हिन्दी दस्तावेजों, पत्रों आदि के अंग्रेजी अनुवाद की मांग नहीं कर सकता। यदि दस्तावेज कानूनी या तकनीकी प्रकृति का हो, तो अंग्रेजी अनुवाद मांगा जा सकता है।

An employee may record a note or minute on a file in Hindi or in English without being himself required to furnish a translation thereof in the other language.

No Central Government employee possessing a working

knowledge of Hindi may ask for an English translation of any document in Hindi except in the case of documents of legal or **technical nature.**

5. नियम / Rule : 8 (4)

जिन अधिसूचित कार्यालयों में 80 प्रतिशत कर्मचारी हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर चुके हैं, केन्द्रीय सरकार आदेश दे सकती है कि वहाँ हिन्दी में ही नोटिंग और ड्राफ्टिंग किया जाए।

The Notified Offices in which 80% of the employees have attained proficiency in Hindi, Central Government may, by order specify these offices to use Hindi alone for noting and drafting.

6. नियम / Rule : 9

वे कर्मचारी हिन्दी में प्रवीणता-प्राप्त समझे जाएंगे जिन्होंने

(क) मैट्रिक या समकक्ष या उससे उच्चतर परीक्षा में हिन्दी को माध्यम के रूप में अपनाया हो।

(ख) बी.ए. अथवा समकक्ष परीक्षा में हिन्दी को वैकल्पिक रूप में अपनाया हो।

(ग) यह घोषणा कर दें कि उन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है।

An employee shall be deemed to possess proficiency in Hindi if-

(i) he has passed the Matriculation or any equivalent or higher examination with Hindi as the medium of examination or

(ii) he has taken Hindi as an elective subject in the degree examination or any other examination equivalent to or higher than the degree examination

(iii) he declares himself to possess proficiency **in Hindi in the form annexed to these rules.**

7. नियम / Rule : 10

वे कर्मचारी हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त समझे जाएंगे जिन्होंने

(क) प्राज्ञ परीक्षा पास की हो।

(ख) प्राज्ञ के समकक्ष कोई परीक्षा पास की हो।

An employee shall be deemed to have acquired working knowledge of Hindi

(i) the Pragya examination or

(ii) passed any other examination equivalent to pragya.

8. नियम / Rule : 10(4)

जिन कार्यालयों के कर्मचारीवृन्द में 80 प्रतिशत को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे। The names of Central Government Offices, 80% of the staff whereof have acquired working knowledge of Hindi, shall be notified in the Official Gazette.

9. नियम / Rule : 11

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों की निम्नलिखित सामग्री हिन्दी/अंग्रेजी दोनों भाषाओं में होगी।

(1) सभी मैन्युअल, कोड, नियम आदि।

(2) सभी फार्म तथा रजिस्टर।

(3) सभी नामपट्ट, सूचनापट्ट, पत्रशीर्ष, लिफाफे और स्टेशनरी की अन्य मदें।

The following items will be in bilingual in Central Government offices:

(i) All manuals, codes, rules etc.

(ii) All forms and Registers

(iii) All Nameboards, Signboards, Letter head, envelopes & other stationery items

10. नियम / Rule : 12

केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह सुनिश्चित करें कि राजभाषा अधिनियम के प्रावधानों का समुचित रूप से अनुपालन किया जाता है और वह इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जाँच-बिंदुओं को निर्धारित करें।

It shall be the responsibility of the administrative head of each Central Government office to ensure that the provisions of the Act and the Rules are properly complied with and to devise suitable and effective check points for the purpose.

चित्र-दीर्घा

एवीएनएल में संपन्न समारोह

चित्र-दीर्घा

एवीईएनएल में संपन्न समारोह

चित्र-दीर्घा

एवीएनएल में संपन्न समारोह

चित्र-दीर्घा

एवीएनएल में संपन्न समारोह

चित्र-दीर्घा

एवीएनएल में संपन्न समारोह

चित्र-दीर्घा

एवीएनएल में संपन्न समारोह

भारतीय सेना द्वारा उपयोग किए जाने वाले युद्धक टैंक

श्रीमती के. गीता, क.का.प्र.

भारत के पास दुनिया की सबसे मजबूत सेनाओं में से एक है। यह युद्ध के लिए कई प्रकार के वाहनों का उपयोग करता है। इनमें मुख्य युद्धक टैंक भी शामिल हैं। टैंक, ज़मीनी हथियारों के लिए भारी कवच मोबाइल प्लेटफ़ॉर्म हैं। वे एक घूमने वाली बंदूक बुर्ज में लगे बड़े-कैलिबर टैंक गन से लैस हैं। इसे मशीनगनों या एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइलों या रॉकेट लॉन्चर सहित अन्य रेंज वाले हथियारों द्वारा पूरक किया जाता है।

इनमें शक्तिशाली इंजिनों एवं ट्रैक का उपयोग किया जाता है । ये टैंक विभिन्न इलाकों तथा कीचड़, बर्फ सहित विभिन्न परिस्थितियों में अच्छी गतिशीलता प्रदान करते हैं, जहां एक पहिया वाहन उतनी कुशलता से काम नहीं कर पाएगा।

भारतीय सेना विभिन्न प्रकार के टैंकों का उपयोग करती है। आइए उन विभिन्न टैंकों पर एक नजर डालें जो वर्तमान में हमारी सेना के पास हैं।

टी-72

रूसी टी-72 मुख्य युद्धक टैंक का उत्पादन यूक्रेन के खार्कोव में मालिशेव एचएमबी प्लांट एवं रूसी संघ के यूकेबीएम निज़नी टैगिल में किया गया था तथा कई देशों में लाइसेंस के तहत उत्पादित किया गया था।

टी-72 का उत्पादन पहली बार 1972 में शुरू हुआ और अनुमानतः 50,000 का निर्माण किया जा चुका है। टी-72 को अल्जीरिया, बल्गेरिया, क्यूबा, चेक गणराज्य, स्लोवाकिया, फिनलैंड, हंगेरी, भारत, ईरान, लीबिया, म्यांमार, उत्तर कोरिया, पोलैंड, रोमानिया, सीरिया एवं यूगोस्लाविया को निर्यात किया गया है।

टी-72 एक वी12 लिक्विड-कूल्ड, चार-स्ट्रोक मल्टी-फ्यूल डीजल इंजिन द्वारा संचालित है जो 840 एचपी विकसित करता है। इसमें हाइड्रोलिक सर्वो-नियंत्रण प्रणाली के साथ एक ग्रहीय ट्रांसमिशन, आरएमएसएच ट्रैक के साथ रनिंग गियर और हाइड्रोलिक शॉक अवशोषक के साथ टोरसन बार सस्पेंशन है।

टैंक की सड़क गति 60 किमी/घंटा एवं सूखी मिट्टी वाली सड़कों पर 35 किमी/घंटा है। मुख्य ईंधन टैंक के साथ सड़कों पर इसकी रेंज 500 किमी है। टैंक बिना किसी तैयारी के 1.2 मीटर तक की गहराई तक फ़ोर्डिंग कर सकता है तथा 5 मीटर की गहराई तक फ़ोर्डिंग के लिए स्नोर्कल फिट किए जा सकते हैं। इसकी कुल लंबाई 6.91 मीटर, कुल ऊंचाई 2.19 मीटर एवं कुल चौड़ाई 3.58 मीटर है।

1970 के दशक में, भारतीय सेना अपने सेंचुरियन और विजयंता मुख्य युद्धक टैंकों को बदलना चाहती थी। सोवियत निर्मित टी-72 टैंक को कई परीक्षणों के बाद चुना गया था। 1978 में, भारत ने सीधे यूएसएसआर से 500 टी-72, टी-72एम और टी-72एम1 टैंक का ऑर्डर दिया।

1980 के दशक में इसका उत्पादन भारी वाहन निर्माणी, आवडी, चेन्नई में शुरू हुआ। भारतीय सेना में 2,000 से अधिक टी-72 टैंक (तीन संस्करणों में) सेवा में हैं।

पहला संस्करण मूल सोवियत टी-72 टैंक है, जिसे टी-72एम कहा जाता है। इसका वजन लगभग 37 टन है एवं इसमें कोई ईआरए पैनल नहीं था। दूसरा संस्करण स्वदेशी टी-72 अजेय टैंक है। इसका वजन लगभग 41.5 टन है तथा यह सोवियत टी-72 टैंक से भिन्न है।

अजेय दो संस्करणों में आता है:

अजेय एमके1 - यह टी-72एम1 का भारतीय निर्मित संस्करण है, जिसे आवडी में बनाया गया था।

अजेय एमके2 - टी-72एम1 का भारतीय संस्करण जिसमें ईआरए एवं प्रत्येक तरफ 6 स्मोक ग्रेनेड-लांचर हैं।

भारत में निर्मित टी-72 अजेय टैंक 125 मिमी 2ए46 स्मूथबोर टैंक गन से लैस हैं, जो एपीएफएसडीएस सहित सभी प्रकार के एंटी-टैंक राउंड फायर कर सकते हैं।

अजेय टैंक में 12.7 मिमी एनएसवी एंटी-एयरक्राफ्ट मशीन गन भी है। इसके अतिरिक्त, टैंक दुश्मन पैदल सेना के सैनिकों को निशाना बनाने के लिए बैरल

के साथ फिट की गई 7.62 मिमी पीकेटी मशीन गन के साथ आता है। लद्दाख में भारत-चीन गतिरोध में भारतीय सेना ने टी-72 अजेय एवं टी-90 टैंक तैनात किए हैं।

टी 90

टी-90 तीसरी पीढ़ी का रूसी मुख्य युद्धक टैंक है। इसका निर्माण रूस के निज़नी टैगिल में यूरालवगोनज़ावॉड द्वारा किया गया है। यह टी -72बी का एक आधुनिक संस्करण है एवं 125 मिमी 2ए46 स्मूथबोर मुख्य गन, 1ए45टी अग्नि-नियंत्रण प्रणाली, एक उन्नत इंजिन एवं गनर की थर्मल दृष्टि के साथ आता है। मानक सुरक्षात्मक उपायों में स्टील और समग्र कवच, धुआं ग्रेनेड डिस्चार्जर्स, कॉन्टै क्ट -5 विस्फोटक-प्रतिक्रियाशील कवच एवं श्टोरा इन्फ्रारेड एटीजीएम जैमिंग सिस्टम का मिश्रण शामिल है। इसे रूस के निज़नी टैगिल में यूरालवगोनज़ावॉड द्वारा डिजाइन एवं निर्मित किया गया था।

फरवरी 2001 में, भारतीय सेना ने 310 टी -90एस टैंकों के लिए एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। इनमें से 124 रूस में बनाए गए थे एवं बाकी सीकेडी किट के रूप में आयात किए गए थे, जिन्हें भारत में असेंबल किया जाता है। भारत ने टी-90 का चयन किया क्योंकि यह टी-72 का विकास था जिसका निर्माण भारत पहले से ही कर रहा था। टी-72 और टी-90 अपने 60% हिस्सों को साझा करते हैं जिससे रखरखाव करना आसान हो जाता है।

पहले 42 पूर्ण भारतीय टैंक, जिन्हें टी-90एस नामित किया गया था, प्रारंभिक श्रृंखला के पुराने कास्ट बुर्ज के साथ आए थे एवं वी-84 इंजिन द्वारा संचालित थे जो 840 एचपी का उत्पादन करते थे। अगले वर्ष अन्य 82 वाहन वितरित किये गये। ये नए वेल्डेड बुर्ज एवं 1,000 एचपी उत्पन्न करने वाले वी-92एस2 इंजिन के साथ आए थे।

टी -90एस का नाम भीष्म रखा गया है। इसे रूस एवं फ्रांस की सहायता से विकसित किया गया है तथा यह फ्रांसीसी थेल्स-निर्मित कैथरीन-एफसी थर्मल स्थलों एवं रूसी कॉन्टैक्ट-5 के-5 विस्फोटक प्रतिक्रियाशील कवच प्लेटों से सुसज्जित है। प्राथमिक कवच के अलावा कॉन्टैक्ट-5 ईआरए जिसमें उच्च तन्यता गुणों वाली लेमिनेटेड प्लेटें एवं सिरेमिक परतें शामिल हैं।

टी -90एस टैंक की लंबाई 9.63 मीटर, चौड़ाई 3.73 मीटर और ऊंचाई 2.22 मीटर है। इसका वजन करीब 46 टन है। टैंक को स्वचालित लोडर द्वारा आपूर्ति की जाती है जिससे टैंक में मैन्युअल लोडर की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। चालक दल में कमांडर, गनर और ड्राइवर सहित 3 व्यक्ति शामिल हैं।

दिसंबर 2007 में, 347 उन्नत टी-90एम टैंकों के लिए तीसरे अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए। इनमें से अधिकांश को तमिलनाडु के आवडी में भारी वाहन निर्माणी द्वारा असेंबल किया जाएगा। 10 लाइसेंस निर्मित टी-90एम का पहला बैच 24 अगस्त 2009 को भारतीय सेना में शामिल किया गया था।

टी-90एम में इसके ललाट पतवार और बुर्ज-टॉप पर 'कैक्टस K-6' बोल्टेड विस्फोटक प्रतिक्रियाशील कवच (ERA) पैकेज है (टी-90एस में 'कॉनटाकट -5' कालीन है), एक उन्नत पर्यावरण नियंत्रण प्रणाली से सुसज्जित है। लड़ने वाले डिब्बे में ठंडी हवा प्रदान करने के लिए इज़राइल के काइनेटिक्स लिमिटेड द्वारा आपूर्ति की गई, नई पीढ़ी के थर्मल इमेजर्स जैसे थेल्स-निर्मित कैथरीन-एफसी थर्मल इमेजर (8-12 माइक्रोमीटर बैंडविड्थ में काम करने वाले) के लिए क्रायोजेनिक कूलिंग सिस्टम के आवास के लिए अतिरिक्त आंतरिक मात्रा है।

अर्जुन

अर्जुन एमके1 को रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) के लड़ाकू वाहन अनुसंधान और विकास प्रतिष्ठान (सीवीआरडीई) द्वारा विकसित किया गया था। इसे 1986 और 1996 के बीच डिजाइन और विकसित किया गया था और 2004 में सेवा में शामिल किया गया था। इसमें ड्राइवर, कमांडर, लोडर और गनर सहित चार सदस्यीय दल होता है।

अर्जुन टैंक एकल एमटीयू मल्टी-फ्यूल वी10 टर्बो-डीजल इंजिन द्वारा संचालित है जो 1,400 एचपी उत्पन्न करता है। यह 4 फॉरवर्ड +2 रिवर्स गियर के साथ टॉर्क कन्वर्टर ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ आता है। टैंक अधिकतम 70 किमी/घंटा की गति से पार कर सकता है तथा 40 किमी/घंटा की गति से क्रॉस-कंट्री यात्रा कर सकता है। इसकी कुल लंबाई 10.190 मीटर, ऊंचाई 3.03 मीटर, चौड़ाई 3.864 मीटर एवं युद्धक वजन 58.5 टन है।

अर्जुन में 120 मिमी राइफल वाली मुख्य बंदूक है जो प्रति मिनट 8 राउंड फायर कर सकती है। टैंक में एक पीकेटी 7.62 मिमी समाक्षीय मशीन गन और एक एनएसवीटी 12.7 मिमी मशीन गन का भी उपयोग किया जाता है। यह स्वदेशी रूप से विकसित आर्मर-पियर्सिंग फिन-स्टेबलाइज्ड डिस्कार्डिंग सैबोट

(एपीएफएसडीएस) एवं दोहरे उद्देश्य वाले उच्च विस्फोटक स्क्वैश हेड (एचईएसएच) सहित कई प्रकार के गोला-बारूद दागने में सक्षम है। यह ब्लो आउट पैनल के साथ ब्लास्ट-प्रूफ कनस्तरों में 39 एपीएफएसडीएस एवंर एचईएसएच राउंड ले जा सकता है।

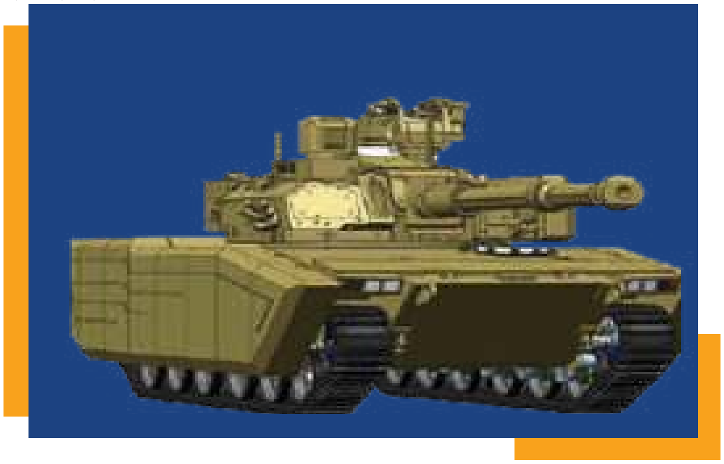

गनर की मुख्य दृष्टि में एक दिन-दृष्टि, थर्मल दृष्टि, एक लेजर रेंज फाइंडर एवं सभी तीन चैनलों के लिए एक स्थिर सिर शामिल होता है। सामान्य देखने वाला हेड मिरर ऊंचाई एवं अज़ीमुथ में स्थिर होता है। दिन का दृश्य दोहरा आवर्धन प्रदान करता है। एक थर्मल इमेजर गनर एवं कमांडर को पूर्ण अंधेरे में और धुएं, धूल, धुंध एवं प्रकाश छलावरण की उपस्थिति में लक्ष्य का निरीक्षण करने तथा निशाना साधने के लिए रात्रि दृष्टि सुविधा प्रदान करता है। मुख्य दृष्टि के साथ अभिन्न अंग लेजर रेंज फाइंडर है जिसके द्वारा लक्ष्य को सटीक रूप से दूर किया जा सकता है।

अर्जुन एमके1ए अर्जुन टैंक का नया संस्करण है। इसमें अर्जुन एमबीटी एमके I पर 14 प्रमुख अपग्रेड हैं। इसमें पूरी तरह से नया डिज़ाइन किया गया बुर्ज है। एमके1 के प्रमुख उन्नयनों में बेहतर कंचन कवच, सुरक्षा के लिए ईआरए, एनईआरए, गन-लॉन्च सैम्हो एटीजीएम का एकीकरण, गनर की मुख्य दृष्टि स्वचालित लक्ष्य ट्रैकिंग प्रणाली के साथ एकीकृत, कमांडर की पैनोरमिक दृष्टि (सीपीएस एमके-II) लेजर रेंजफाइंडर और दोहरी आवर्धन के साथ शामिल है। शिकारी हत्यारा क्षमता के लिए एफसीएस के साथ इंटरफेस किया गया दिन का दृश्य और अनकूल्ड थर्मल दृष्टि, दूरबीन दृष्टि के साथ चालक की अनकूल्ड दृष्टि प्रणाली, रिमोट नियंत्रित हथियार स्टेशन, ट्रैक चौड़ाई माइन प्लो, चालक दल की सुरक्षा के लिए व्यक्तिगत शटर (सीएबीआईएस) के साथ कंटेनरीकृत गोला बारूद बिन, उन्नत भूमि नेविगेशन प्रणाली , दोहरी बिजली उत्पादन क्षमता के साथ नई सहायक बिजली इकाई, चपलता आदि को बढ़ाने के लिए नए उन्नत रनिंग गियर सिस्टम (एआरजीएस) के साथ पुन: डिज़ाइन किया गया हाइड्रोन्यूमेटिक सस्पेंशन सिस्टमआदि भी शामिल हैं। इसमें पहले के मॉडल में 41% के मुकाबले 54.3% स्वदेशी सामग्री है।

नई तरक्की ज़ोरावर- लाइट टैंक

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और निजी क्षेत्र की कंपनी लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) संयुक्त रूप से लाइट टैंक जोरावर विकसित कर रहे हैं। इस सहयोगात्मक प्रयास का उद्देश्य पर्वतीय सीमा क्षेत्रों में भारत की रक्षा क्षमताओं को बढ़ाना है, विशेष रूप से चीन के साथ चल रहे गतिरोध को लक्षित करना। उम्मीद है कि इस साल के अंत तक टैंक परीक्षण के लिए तैयार हो जाएगा।

टैंक का नाम जनरल ज़ोरावर सिंह के नाम पर रखा गया है, जो एक महान व्यक्ति थे जो अपने नेतृत्व एवं तिब्बत में जीत के लिए जाने जाते थे। टैंक को उनके नाम के साथ जोड़कर, यह अतीत की वीरता एवं उपलब्धियों का प्रतीक है और इसका उद्देश्य वर्तमान तथा भविष्य के रक्षा कर्मियों को प्रेरित करना है।

लाइट टैंक ज़ोरावर का विकास वास्तविक नियंत्रण रेखा पर 2020 के गतिरोध के दौरान चीनी लाइट टैंकों के उद्भव से प्रेरित हुआ था। चीनी सेना के तेज़ गति वाले हल्के टैंकों के कब्जे ने संभावित खतरों का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने के लिए भारत के पास समान क्षमता रखने की आवश्यकता पर जोर दिया। एक बार जब लाइट टैंक ज़ोरावर परीक्षण के लिए तैयार हो जाएगा, तो इसे

लद्दाख सेक्टर में तैनात किया जाएगा। चीन की सीमा से नजदीक होने के कारण यह क्षेत्र सामरिक महत्व रखता है। परीक्षण टैंक के प्रदर्शन का मूल्यांकन करेंगे एवं उच्च ऊंचाई वाले पहाड़ी इलाकों में इसकी प्रभावशीलता को मान्य करेंगे।

पर्वतीय सीमावर्ती क्षेत्रों में अपनी तैनाती के अलावा, लाइट टैंक ज़ोरावर अन्य क्षेत्रों में भी प्रासंगिकता रखता है। कच्छ का रण क्षेत्र और रेगिस्तानी इलाके अतिरिक्त वातावरण प्रदान करते हैं जहां ये टैंक प्रभावी ढंग से काम कर सकते हैं। तेज़ गति से यात्रा करने की अपनी क्षमता के साथ, वे ऐसे इलाकों में सामरिक लाभ प्रदान करते हैं।

इसके विपरीत, चीन से ही झेड टीक्यू-105 लाइट टैंक का संचालन होता है, जिसका पहली बार 2016 में झुहाई एयर शो में अनावरण किया गया था। झेड टीक्यू-105 में 105 मिमी राइफल वाली बंदूक है जो ज्यादातर 2 से 3 किमी की दूरी तक हाई एक्सप्लोसिव एंटी टैंक (तापमान) एवं आर्मर पियर्सिंग राउंड फायर करने में सक्षम है।

रिपोर्ट के अनुसार, डीआरडीओ ने पहले लाइट टैंक के आधार के रूप में एलएंडटी द्वारा निर्मित कोरियाई के-9 वज्र-टी 155 मिमी सेल्फ-प्रोपेल्ड आर्टिलरी गन चेसिस के उपयोग का इरादा किया था। हालाँकि, इस योजना को इसलिए छोड़ दिया गया क्योंकि टैंक का वजन 25 टन की आवश्यकता के कारण 34-35 टन तक बढ़ जाता है।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि वर्तमान में सेना द्वारा उपयोग किए जा रहे टी-72, टी-90 एवं अर्जुन एमके-1 और एमके-1ए टैंक अपने भारी वजन के कारण ऊंचाई वाले क्षेत्रों में संचालन के लिए अनुपयुक्त हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार, ऊंचाई पर विरल वातावरण के कारण इन टैंकों के इंजिन समुद्र-स्तर की तुलना में काफी कम बिजली पैदा करते हैं, जिससे टैंक की मशीनरी में काफी टूट-फूट होती है।

इसके अलावा, इन टैंकों की 125-मिमी तोपों का ऊंचाई एवं अवनमन कोण भी पहाड़ी चोटियों तथा घाटियों पर लक्ष्य को भेदने में बाधाएँ उत्पन्न करता है।

हालाँकि, लाइट टैंक के बेल्जियन जॉन कॉकरिल 105 मिमी बुर्ज में -10/+42° के बड़े उन्नयन कोण के साथ ऐसी कोई सीमा नहीं है। बुर्ज एक ऑटोलोडर के साथ आता है एवं तापमान के साथ-साथ एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइलें भी दाग सकता है।

लाइट टैंक के इंजिन को उच्च ऊंचाई पर उपयोग के लिए अनुकूलित किया जाएगा और इसका निर्माण जर्मन फर्म एमटीयू द्वारा किया जाएगा। इंजिन अधिकतम 800 एचपी की हॉर्सपावर पैदा करेगा।

हँसने का समय

Laughter time

एक छोटा बच्चा बहुत देर से घर के बाहर खड़ा दरवाजे की घंटी बजाने की कोशिश कर रहा था तो एक
बूढ़ा आदमी आया।
बूढ़ा: क्या कर रहे हो बेटा ?
बच्चा: घंटी बजाना चाहता हूँ।
बूढ़ा आदमी (घंटी बजा कर): यह लो बज गई, अब क्या है ?
बच्चा: अब भागो !
बूढ़ा: ? ? ? ?

A small boy was trying to press the calling bell of a house. An old man came and asked:
Old man : What are you doing my child ?
Boy : I want to ring the calling bell.
Old man : (rings the calling bell) : over? bell rang and what next ?
Boy : now run away !
Old man : ? ? ? ?

गोपाल: लंबी उम्र का तरीका बताइए डॉक्टर साहब ?
डॉक्टर: शादी कर लो।
गेपाल: इससे उम्र लंबी हो जाएगी।
डॉक्टर: नहीं, ये शौक खत्म हो जाएगा।

Gopal: Doctor, please tell me how to live a long life?
Doctor: Get married.
Gopal: will this make life longer?
Doctor: No, it will end this curiosity.

भाई-भाई हैं

मूल कहानीकार - अखिलन

तमिल से हिन्दी में अनुवाद

- श्रीमती गीता पार्थसारथी,
कनिष्ठ अनुवाद अधिकरी

दूर से देखने पर प्रभात कालीन सूर्य की चमकीली किरणों में चांदी-सी हिमावृत चोटियाँ दुश्मनों को डराने वाले नुकीले हथियारों की तरह दिख रही थीं। शिखरों से होती हुई सूर्य की सुनहरी किरणें अभी तक जंगल में प्रवेश नहीं कर सकी हैं। पर्वत की तलहटी में हृदय को कंपाने वाले शीतल वायु का झोंका और धुंधलापन अभी भी है।

ऊपर की ओर लंबे अजगर की तरह संकीर्ण टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता जा रहा था। रास्ते की दोनों तरफ लंबे-चौड़े पेड़ एवं छोटे-छोटे पहाड़ी झरने नज़र आते हैं। बर्फीली पट्टियाँ टूट कर पानी में बहने के कारण झरने में पैर रखने पर उसे तख्ती की तरह ही निकाला जा सकता है। वृक्षों की शाखाओं तथा पत्तों से बर्फ की बूँदें टपक रही हैं।

ऐसे डरावने एवं शीत प्रांत में 20 सैनिक एक के पीछे एक करके जा रहे थे। उनके चलने के अलावा और कोई ध्वनि सूचक नहीं था। इस ध्वनि में कुछ भेद समझने पर सैनिकों का कप्तान कुमार पीछे की ओर देखता था। फिर अपने दल के साथ आगे बढ़ता था। यह उनका दूसरा दिन था। जासूसी करने के लिए जाने वाला सैनिकों का दल है यह। इसके पीछे एक और सैनिक दल आ रहा है जिसका कप्तान है राज बहादुर। उसके पीछे 100 सैनिकों का दल आ रहा था जोकि जंगल को काट कर रास्ता बना रहा था। इस रास्ते के बाद अस्थायी सेना का खेमा बना हुआ था। वहाँ के सैनिकों को भी मिला कर वहाँ पर कुल 300 सैनिक कार्यरत थे। वह आने-जाने का रास्ता नहीं था। सैनिकों, युद्ध उपस्करों आदि को हेलिकॉप्टर के सहारे ला कर इस खेमे में जगह बना कर रखा गया है। यह चीन के अवैध आक्रमणकारी प्रदेश है जोकि उत्तर-पूर्वी भारत की सीमा प्रांत में है। सूरज आसमान के ऊपर की ओर बढ़ रहा था। कुमार का सैनिक-दल भी पर्वत की चोटी तक पहुँच गया। वहाँ सूर्य का प्रकाश चांदनी की तरह था। उस स्थान में प्रकाश था मगर गरम नहीं था।

उस पहाड़ को पार करके जाने का आदेश उन्हें नहीं मिला है। इसलिए जहाँ शृंखलाबद्ध चट्टानों के बीच प्राकृतिक शिविर जैसा स्थान दिखाई दिया वहाँ पर कुमार ने अपने सैनिकों की ठहरने, खाने- पीने की व्यवस्था की थी। कुमार ने अपने दल के साथ यहाँ ठहरने व विरोधी-दल की जानकारी का कुछ पता नहीं चलने का समाचार अपने पीछे आने वाले एवं सीनियर राज बहादुर को भेज दिया। फिर मुख्यालय से संपर्क करने पर वहाँ का सिग्नल नहीं मिला। शायद मशीन खराब हो गई थी। कुमार एक चट्टान पर खड़े हो कर दूरबीन द्वारा उस प्रांत की पूरी तरह से जाँच कर रहा था। मध्यम ऊँचाई, घुमावदार मूँछ, पतला एवं मजबूत कद, काला रंग का है यह वीर सैनिक। ''चीन की अनुकूल स्थलाकृति उनकी सीमा पर है। रास्ता बना कर कभी भी वाहनों पर आ सकते हैं, जोकि हमारे लिए प्रतिकूल है। इसका उपयोग करके इस सीमा प्रांत को हड़पने के लिए कभी भी चीनी सेना यहाँ पहुँच सकती है।''-साथ में खड़े मराठा सैनिक से कुमार ने कहा। मराठा सैनिक ने कहा-''चीनियों का जो भी साहस है वह केवल इस पहाड़ी क्षेत्र में चलता है। जब वे समतल भूमि पर आ जाते हैं तब हम उन्हें मात देंगे।अचानक बातें बंद करके कुमार ने अपनी नज़रों को और तेज करा दिया। ध्यान से देखने लगा। फिर उस मराठा सैनिक को भी दूरबीन दे कर एक ओर इशारा करके वहाँ पर देखने को कहा। ''हाँ, काफी बड़ी भीड़ है''-दूसरे सैनिक ने कहा। कोई वाहन नहीं है। गधों पर सामान लाद कर आ रही है भीड़। पत्तों की आड़ पर आ रही है वह सेना। कुमार का चेहरा लौहे की प्रतिमा-सा बदल गया। वह फिर मराठा सैनिक के हाथों से दूरबीन को ले कर गौर से देखने लगा। उसने वायरलेस द्वारा मुख्यालय से संपर्क करने की कोशिश की। लेकिन मुख्यालय से संपर्क नहीं हो पाया। इस ओर केवल बीस सैनिक हैं। उस ओर से लगभग एक हज़ार सैनिक आगे आ रहे हैं। कुमार ने ज़रा सोचा। फिर उसने पीछे आने वाले राज बहादुर को खबर भेज दी।

एक मील की अंतराल से आ रहे राज बहादुर ने जैसे ही सुना कि हज़ारों चीनी बगैर किसी वाहन के दो मील की दूरी पर पैदल आ रहे हैं तो वह चौंक गया। उसने कुमार से कहा-''इस मुकाम के कुल सैनिकों की संख्या आने वाले सैनिकों की तुलना में एक तिहाई ही होगी।'' कुमार ने जवाब दिया कि ''चिंता मत करो। हम लोग कम से कम सौ चीनियों को मार कर ही मरेंगे। लगभग एक घंटे तक उन्हें व्यस्त रखा जा सकता है। तब तक तुम पीछे जा कर ''पायनीयर'' सेना से जुड़ जाओ। जो पुल हमने बनाया है उस पर बम डालने पर कुछ और लोग मर जाएंगे। और आप सभी लोग जंगल में छिप कर बाकी दुश्मनों को भगा सकते हैं। बोलो, क्या करने वाले हो ?

राज बहादुर-''तुमने जो कुछ कहा, सब ठीक है। मैं भी पायनीयर सेना को खबर भेजता हूँ। लेकिन तुम्हें अक्ल थोड़ा कम है। बीस लोगों को साथ में रख कर कितने लोगों को संभाल सकते हो ?

कुमार - ''हमारी संख्या दुश्मनों को मालूम नहीं पड़ेगी। कोई बात नहीं। फिर भी चुप रह, मैं देख लेता हूँ।''

राज बहादुर - तू बेवकूफ ही नहीं। झगड़ालू भी है। झगड़ा करने का वक्त यह नहीं है।

कुमार - हम दोनों की नौकरी एक ही होने पर भी तुम मुझसे सीनियर हो। इसलिए मैं तेरे वहाँ आता हूँ। मुझे आज्ञा दे दो। जल्दी आज्ञा दे दो।

राज बहादुर - ठीक है। आ जाओ। अपने आप मुस्कुराए खड़ा रहता है। कुमार झगड़ालू प्रवृत्तिवाला होने पर भी सेना नियमों का उल्लंघन नहीं कर रहा है और उससे आज्ञा पाने के लिए आ रहा है। इससे राज बहादुर संतुष्ट और खुश भी है।

दूर से कुमार को देखते ही राज बहादुर कहता है कि 'दुष्ट मदरासी हो' तो कुमार प्रतिक्रिया में कहता है कि 'तुम जंगली पंजाबी हो'। ऐसे एक दूसरे को संबोधित कर मज़ाक उड़ाते हैं। अब दोनों का दल मिल कर कुल 120 सैनिक हैं। सामने से सागर की लहरों की तरह चीनी सेना सैकड़ों की संख्या में आगे बढ़ रही है। सबको मालूम पड़ा कि मौत सुनिश्चित है। इसलिए उन्होंने शपथ ली थी कि हरेक दस-दस के हिसाब से दुश्मनी सैनिकों को मार कर ही अपने को मौत के हवाले करेंगे।

दुश्मन सेना काफी नज़दीक आ गई है। कुमार अपनी योजनाओं को राज बहादुर को बताने लगा कि ''हमें तीन कार्य करने हैं। पहला - हमारी संख्या हर हालत में दुश्मनों को मालुम नहीं होनी चाहिए। इसके लिए शत्रुओं पर अचानक आक्रमण करना होगा। दूसरी बात-शत्रुओं को यह लगना होगा कि हमारी सेना काफी बड़ी है। इससे उनकी मानसिकता को कमज़ोर बना सकते हैं। हमारा आक्रमण इतना ज़ोर से होना चाहिए कि इससे शत्रु सेना को भारी नुकसान पहुँचना चाहिए। तीसरी बात - मैं इस सेना का नेतृत्व करके दुश्मनों का सामना करता हूँ और तुम मुख्यालय एवं पायनीयर सेना को संदेश भेजते रहो ताकि आज इस युद्ध में हम लोग मर गए तो भी आगे के जंक्शन में दुश्मन हार कर लौट सके।"

राज बहादुर ने भी कुमार की योजनाओं को मान लिया। हालांकि वह कुमार से कम उम्र एवं ऊँचा कद वाला है और युद्ध करना चाहता था फिर भी संदेश भेजना भी काफी उत्तरदायी काम है। इसलिए राज बहादुर ने संदेश भेजने की जिम्मेदारी ले ली। लाल चीनी की पीली सेना लहरों के फेन की तरह आक्रामक रूप से आगे आने लगी। भारतीय सैनिक श्वास को नियंत्रित करके पलकें झपके बिना तोपों पर उँगलियाँ रख कर अपने कप्तान की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे थे। दुश्मन करीब आ भी गए। ''डुमील''। एक गोली चीनियों की दिशा से भारतीय सैनिक के सिर के ऊपर से हो कर जा गिरी। भारतीय सैनिक क्रोध से देख रहे थे कि क्यों हमारा कप्तान आदेश नहीं दे रहा है और विलंब कर रहा है ?

''बेवकूफ, बेवकूफ ! तू किस दुनिया में है ?'' राज बहादुर ने कुमार की कानों में चिल्लाया। उसे लगा कि पहले कुमार पर गोली मार कर फिर कोई दूसरा काम करे।

''गुस्सा मत करो राज'' कुमार ने बताया। ''वे लोग शक पर गोली चला रहे हैं। और भी निकट आ गए तो हमारी हर गोली पर एक-एक आदमी मर जाएगा न ?"

कुमार की बातों पर चकित रह गया राज बहादुर।

अब काफी नज़दीक आ गयी थी दुश्मनी सेना। कुमार ने सबको इशारे से गोली चलाने की आज्ञा दी और खुद गोली चलाने लगा। मशीन गनों की आवाज़ें उस पहाड़ी क्षेत्र एवं जंगल में काफी देर तक गूँजने लगीं। हिमगिरि काँप उठा। जंगल हिलने लगा। चांदी की तरह चमकने वाला हिमगिरि का बर्फ अब खून

से लाल-लाल दिखने लगा। उस क्षेत्र में घायल सैनिकों की आवाज़ सुनने वाले के हृदय को कंपाने लगा। इस प्रकार के भारतीय सैनिकों के अचानक एवं आक्रामक आक्रमण के लिए तैयार नहीं थी दुश्मनी सेना। इसलिए वह चीनी सेना सवा घंटे में अनेक सैनिकों को गँवा दी थी। फिर भी वे सैनिक कुछ भी परवाह किए बिना अँधाधुँध से आगे बढ़ने लगे। भारत के पक्ष में लगभग 10 सैनिक वीर स्वर्ग पहुँच गए। अब शत्रु सेना को भारतीय सैनिकों की संख्या भी ज्ञात होने लगी। इसलिए बहुत ही आक्रामक तरीके से आगे बढ़े। ''जब तक अंतिम वीर जिंदा है अथवा अंतिम गोली बची है तब तक हम लड़ते रहेंगे'' कुमार ने अपनी बातों से भारतीय सैनिकों को उकसाया। तब तक संदेश भेजने वाले राज बहादुर भी कुमार के साथ अब बंदूक ले कर गोलियां चलाने लगा। दुश्मनों की एक गोली कुमार के कंधे पर लगी तो दूसरी गोली ने राज बहादुर की संदेश पेटी पर लगी और उसे चूर-चूर कर दी थी। कुछ देर बाद राज बहादुर ने देखा कि कुमार को छोड़ कर अन्य सभी सैनिक स्वर्ग सिधारे। कुमार भी खूब घायल हो कर बेहोश पड़ा था। राज बहादुर को कुछ समझ में नहीं आया। वह दुश्मनों की नज़र बचाकर कुमार को लादते हुए एक चट्टान के पीछे आ गया। वहाँ पर भी वह नहीं रुका था।

कुमार को अपने कंधे पर उठाते हुए दौड़ने लगा। एक जगह पर पाँव फिसल गया। दोनों एक दूसरे को लिपटाते हुए पहाड़ से गिरे। जब राज बहादुर होश में आया तब देखा कि कुमार और वह दोनों एक झुरमुट में पड़े हैं। उसने कुमार की नाक पर उंगली रख कर देखा तो पाया कि उसकी सांस तेज गरम है।

संध्या का समय था। राज बहादुर ने दूरबीन जोकि अब तक काम कर रहा था, उसके जरिए देखा तो समझ गया कि चीनी सेना आधी हो कर अपने मुकाम की ओर लौट रही है। राज ने खुशी एवं गर्व से कहा कि आज हमारी योजना सफल हुई है। ये बातें सुन कर कुमार भी होश में आ गया। वह भी आनन्दित हो उठा और बोला कि तुमने अच्छी खबर सुनाई दी। अब मुझ पर गोली चला कर तुम सावधानी से वापस लौट जाओ। राज ने चिल्लाया कि ''क्या तुझ पर गोली चलाना है। अक्ल गड़बड़ है क्या तेरी ? तुम बच जाओगे।'' कुमार ने कहा- देखो अब हमारे लिए समय बहुत कम है। यह झगड़ा करने का वक्त नहीं है। मुझसे यह दर्द सहा नहीं जा रहा है। इसलिए तुम मुझ पर गोली मार कर यहाँ से चले जाओ।''

राज बहादुर, कुमार को ले जाना चाहता था। कुमार ने सोचा कि राज का प्रयत्न व्यर्थ होगा। दोनों के बीच तर्क के कारण थक कर फिर से कुमार बेहोश पड़ गया।

कुछ साल पहले दोनों की मुलाकात हॉकी टूर्नामेंट में हुई थी, दोनों ने गोल के लिए जो झगड़ा किया और मैच के बाद जो तर्क हुआ था इत्यादि को याद करने लगा राज बहादुर। हालांकि दोनों ने खेलते वक्त एक दूसरे से विरोधी का बर्ताव किया, सेना में भर्ती होने के बाद एमेर्जंसी के दौरान जब दोनों की मुलाकात हुई थी तब दोनों के बीच पहले ही हुए परिचय के कारण दोस्ती बढ़ गई। अंधेरा छाने लगा। मशीन गन को अपने एक कंधे पर रख कर दूसरे कंधे पर कुमार को खड़ा करके ले जाने लगा राज। कुमार कराहते हुए बोला कि ''छोड़ो। मुझे ले जा कर अकेले तुम मुसीबत में पड़ जाओगे। रास्ते में कोई चीनी ने तुम्हें देखा तो मेरे साथ तुम्हें भी मरना होगा। तुम अकेले चले जाओ राज।'' लेकिन राज बहादुर कुमार की बातें सुनने को तैयार नहीं था। वह बोला कि ''कुमार तुम पर प्यार की बात छोड़ो। तुम इस भारत का एक महत्वपूर्ण वीर सैनिक हो। तुझ जैसे वीर सैनिक का जीवित रहना देश के लिए अत्यावश्यक है। मुझे अपना कर्तव्य करने दो।'' बोलते हुए धुँधले रास्ते और बर्फ की बारिश में राज बहादुर, कुमार को उठा कर ले चला। अंधेरे और बर्फीली बारिश के कारण रास्ता दिखाई नहीं दिया। राज अपने रास्ते पर डट कर चलने लगा। मन में धीरज एवं बहादुरी, सोच में सत्कृत्य के कारण आनन्द, अपने देश के वीर जो कि भाई के समान है, को बचाना, देश भक्ति आदि सब उसके चलने की गति को और बढ़ाई। उसके मन के भीतर शत्रुओं को भगाने की तेज आग, बाहर बर्फीली बारिश एवं अंधेरी रात, मन के भीतर से एक ओर भूख और थकावट वहीं दूसरी ओर उत्साह, फुर्तीला एवं प्रकाश ! उसे देखने वाले को यह जरूर लगेगा कि मानो वह कोई पिशाच या शैतान हो।

उसके कंधे से कुमार तेज बुखार से कराह रहा था। राज बहादुर समझ गया कि वह बुखार से पीड़ित है फिर भी उसके जिंदा रहने से वह संतुष्ट था। वह रातभर कुमार को ले कर कितनी दूर पैदल चला शायद जंगल और पहाड़ जानते हैं लेकिन कुमार जानता नहीं था। प्रभात हो गई। झरने के पास आ गया राज बहादुर। भारतीय सैनिकों ने पुल को बम डाल कर कुचाल दिया। लगा कि वहाँ पर भी भीषण युद्ध हुआ था। तुड़वाए गए पुल को देख कर राज बहादुर को लगा कि उसका सिर चक्कर खा रहा है। वह कुमार को ले कर झरने के उस पार कैसे जा पाएगा ? जैसे यह सोच आई वह भी कमज़ोरी महसूस करने लगा। कुमार को कंधे से नीचे उतारा। उसका पूरा बदन दर्द कर रहा था। कंधे, पैर सब दर्द कर रहे थे। जम कर बर्फीली बारिश बरसने के कारण उसके ओंठ फट गए। आँखें लाल-लाल हो गई। 'हे भगवान ! कुमार को बचाओ। वह भारत माँ का सच्चा वीर है।' अपने को भूल कर कुमार के लिए वह रोने लगा।

शायद उसका रुदन कुमार की कानों में सुनाई दिया। कुमार की आँखे खुलीं। उसने मुस्कुराने की कोशिश की। कुमार बोल उठा-'पगला गए हो। क्या ? किसी न किसी तरह झरने के संकीर्ण रास्ते से जा कर कूद कर उस पार चले जाओ। मुझे छोड़ो। मेरी बातों को नहीं मानोगे क्या ? माँ-बेटे की प्यार भरी निगाहों की तरह राज ने भी एक माँ की तरह प्यार से कुमार को देखा। फिर बोला - ''कुमार ! मैं शादिशुदा नहीं हूँ। लेकिन मेरे भाई हैं। मैंने सुना कि तुम्हें एक प्यारी पत्नी भी है और इसी महीने तुम एक बच्चे का बाँप बनने वाले हो। अगर मैं मरा तो यह देश केवल एक वीर सैनिक को ही गँवाएगा। लेकिन तुम तो एक वीर सैनिक, एक पति और एक पिता भी हो। तुम अच्छी तरह जानते हो। बताओ, इस देश के लिए महत्वपूर्ण अब कौन हैं ?
कुमार ने पूछा - मेरे परिवार के बारे में कैसे जानते हो ? तुम्हारे दोस्त षण्मुगम ने बताया। कुमार की आँखों से आँसू बहने लगे। एक ही पल में उसे अपनी पत्नी, अपना गाँव, गाँव के प्राकृतिक दृश्य, नदी आदि नज़र आए। दूसरी ओर

राज बहादुर से पहली मुलाकात, हॉकी टूर्नामेंट के समय पर हुए वाद-विवाद, झगड़ा और अब की स्थिति आदि एक-एक करके उसके दिमाग में आए। वह आँसू भरे आँखों से राज बहादुर को लिपटा कर बोला कि अब मेरे कोई भाई नहीं हैं। तुम ही मेरे वास्तविक भाई हो और मेरे प्यारे भाई हो।'' फिर बेहोश हो गया। राज बहादुर फिर से कुमार को कंधे पर उठा कर निकला। यह पुनीत यात्रा उस झरने के तटीय रास्ते की ओर से होती गई। अचानक जंगल में किसी के पत्तों पर से हो कर इधर-उधर चलने की आवाज़ सुनाई दी। राज बहादुर कुमार को कंधे पर लेते हुए दौड़ने लगा।

जब कुमार को होश आया तो उसने पाया कि वह मिलीटरी अस्पताल में भर्ती हुआ है। उसके बदन बैंडेज से पूरी तरह बंधा हुआ है। कुमार के आसपास के बेड में इसी प्रकार घायल सैनिक इलाज के लिए भर्ती हुए हैं। कुमार का मित्र षण्मुगम् उसके पास खड़ा था।
'राज ! राज ! राज कहाँ है ?' कुमार ने षण्मुगम से राज बहादुर के बारे में पूछा।

हमारे सैनिकों ने झरने के नज़दीक तुम्हें और राज बहादुर को देखा कि तुम्हारे ऊपर राज बहादुर गिरा हुआ था। उसकी जान चली गई। तुम्हें बेहोशी हाल में ला कर सैनिकों ने इस अस्पताल में भर्ती कराया। हमारे सैनिकों ने जंगल में छिपे कुछ चीनी सैनिकों को भी मार दिया। राज बहादुर के शव के दस फीट पर दूसरे चीनी सैनिक का शव भी मिला था। लगता है कि राज बहादुर और उस चीनी सैनिक के बीच में घमासान युद्ध हुआ होगा। दोनों एक दूसरे पर वार करके एक ही समय पर गोली चला दी थी। कुमार ने कुछ नहीं कहा। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। षणमुगम् ने कुमार को एक पत्र दिखाया कि घर से आया है। तुम्हारी पत्नी को बेटा पैदा हुआ है और वह बिलकुल तेरा जैसा है। कुमार ने आँसू पोंछ कर षण्मुगम से कहा - जैसे मैं बताता हूँ वैसे एक पत्र मेरे घरवालों को लिखो। मेरे बेटे का नाम ''राज बहादुर'' रखने के लिए लिखो। उसका नाम बार-बार बुलाते समय मुझे तसल्ली मिलती रहेगी।

षण्मुगम ने पूछा - यह नाम तो तमिल वालों का नाम जैसा नहीं है ? दर्द भरे हृदय से कुमार ने उत्तर दिया कि रामन, कृष्णन, कैलासम् आदि नाम तमिलनाडु में काफी बरसों से रखते आ रहे हैं ? क्योंकि हमारे देश में हज़ारों भिन्नता के बीच एक मजबूत संस्कृति स्थापित है। मेरे और तेरे लिए हिमालय हमारी संपत्ति है। उसे बचाने के लिए हम अपनी जान देते हैं। उसी प्रकार कन्याकुमरी और रामेश्वरम राज बहादुर की संपत्ति है। वह मेरे प्राणों में और खून में बसा हुआ है। राज बहादुर और मैं एक ही भारत माता के बेटे हैं। यह दीर्घ काल का रिश्ता है। इसलिए तुम मेरे घर वालों को यह पत्र लिखो।

षण्मुगम् की आँखों से भी आँसू बहने लगे। वह पत्र लिखने लगा। उसकी कानों में सुब्रमण्य भारती के गीत गूँज उठे।
''झगड़े करने पर भी भाई, भाई ही है।''
क्या वह चीनी हो सकता है ? क्या वह चीनी हो सकता है ?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई)

श्रीमती वाणी राजेश,
सहायक/ आर एंड डी

एआई को समझना

मोटे तौर पर कहें तो, कृत्रिम रूप से बुद्धिमान प्रणालियाँ आमतौर पर मानव संज्ञानात्मक कार्यों से जुड़े कार्य कर सकती हैं - जैसे भाषण की व्याख्या करना, गेम खेलना और पैटर्न की पहचान करना। वे आम तौर पर बड़ी मात्रा में डेटा संसाधित करके, अपने स्वयं के निर्णय लेने में मॉडल के पैटर्न की तलाश करके ऐसा करना

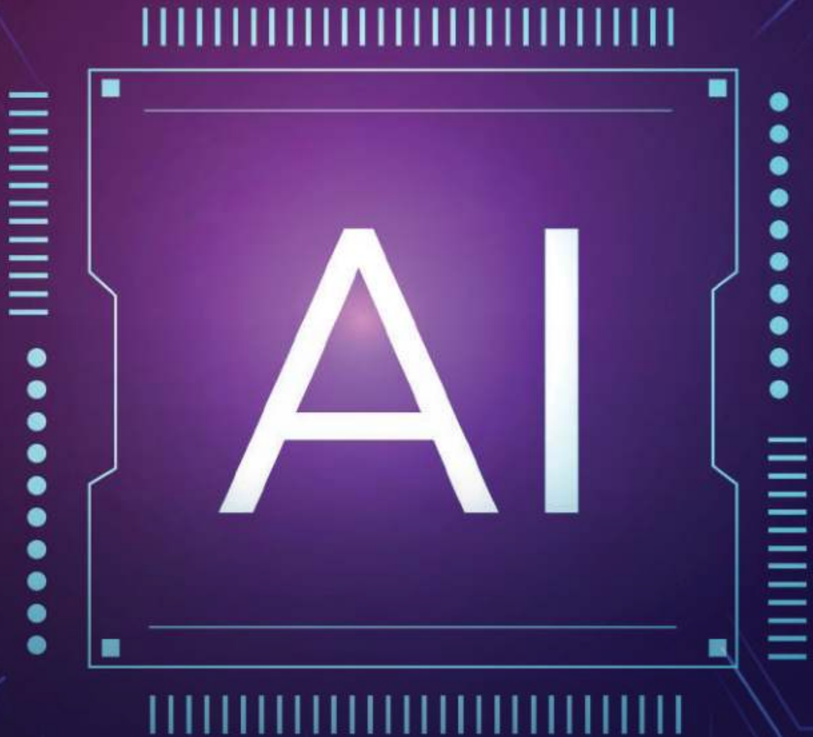

सीखते हैं। कई मामलों में, मनुष्य एआई की सीखने की प्रक्रिया की निगरानी करेंगे, अच्छे निर्णयों को सुदृढ़ करेंगे और बुरे निर्णयों को हतोत्साहित करेंगे। लेकिन कुछ एआई सिस्टम को पर्यवेक्षण के बिना सीखने के लिए डिज़ाइन किया गया है - उदाहरण के लिए, एक वीडियो गेम को बार-बार खेलना जब तक कि वे अंततः नियमों और जीतने के तरीके का पता नहीं लगा लेते।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) क्या है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) सॉफ्टवेयर-कोडित अनुमानों द्वारा मानव बुद्धि के अनुकरण को संदर्भित करता है। आजकल यह कोड क्लाउड-आधारित, एंटरप्राइज़ एप्लिकेशन से लेकर उपभोक्ता ऐप्स और यहां तक कि एम्बेडेड फ़र्मवेयर तक हर चीज़ में प्रचलित है।

वर्ष 2022 ने जनरेटिव प्री-ट्रेनिंग ट्रांसफार्मर के अनुप्रयोगों के साथ व्यापक परिचितता के माध्यम से एआई को मुख्यधारा में ला दिया। सबसे लोकप्रिय एप्लिकेशन ओपन एआई का चैटजीपीटी है। चैटजीपीटी के प्रति व्यापक आकर्षण ने इसे अधिकांश उपभोक्ताओं के मन में एआई का पर्याय बना दिया है। हालाँकि, यह उन तरीकों के केवल एक छोटे से हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है जिनका आज एआई तकनीक का उपयोग किया जा रहा है।

होती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक उपसमूह मशीन लर्निंग (एमएल) है, जो इस अवधारणा को संदर्भित करता है कि कंप्यूटर प्रोग्राम मनुष्यों की सहायता के बिना स्वचालित रूप से सीख सकते हैं और नए डेटा को अनुकूलित कर सकते हैं। गहन शिक्षण तकनीकें पाठ, छवियों या वीडियो जैसे बड़ी मात्रा में असं

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को समझना

जब अधिकांश लोग कृत्रिम बुद्धिमत्ता शब्द सुनते हैं, तो पहली चीज़ जो वे आमतौर पर सोचते हैं वह है रोबोट। ऐसा इसलिए है क्योंकि बड़े बजट की फिल्में और उपन्यास मानव जैसी मशीनों के बारे में कहानियां बुनते हैं जो पृथ्वी पर कहर बरपाती हैं। लेकिन सच्चाई के आगे कुछ नहीं हो सकता।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस सिद्धांत पर आधारित है कि मानव बुद्धि को इस तरह से परिभाषित किया जा सकता है कि एक मशीन आसानी से इसकी नकल कर सकती है और सबसे सरल से लेकर और भी अधिक जटिल कार्यों को निष्पादित कर सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लक्ष्यों में मानव संज्ञानात्मक गतिविधि की नकल करना शामिल है। क्षेत्र में शोधकर्ता और डेवलपर सीखने, तर्क और धारणा जैसी गतिविधियों की नकल करने में आश्चर्यजनक रूप से तेजी से प्रगति कर रहे हैं, इस हद तक कि इन्हें ठोस रूप से परिभाषित किया जा सकता है। कुछ लोगों का मानना है कि नवप्रवर्तक जल्द ही ऐसी प्रणालियाँ विकसित करने में सक्षम हो सकते हैं जो किसी भी विषय को सीखने या तर्क करने की मनुष्य की क्षमता से अधिक होंगी। लेकिन अन्य लोग संशय में रहते हैं क्योंकि सभी संज्ञानात्मक गतिविधियाँ मूल्य निर्णयों से जुड़ी होती हैं जो मानवीय अनुभव के अधीन होती हैं।

जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी आगे बढ़ती है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता को परिभाषित करने वाले पिछले बेंचमार्क पुराने हो गए हैं। उदाहरण के लिए, जो मशीनें बुनियादी कार्यों की गणना करती हैं या ऑप्टिकल कैरेक्टर पहचान के माध्यम से पाठ को पहचानती हैं, उन्हें अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रतीक नहीं माना जाता है, क्योंकि इस फ़ंक्शन को अब एक अंतर्निहित कंप्यूटर फ़ंक्शन के रूप में स्वीकार किया जाता है।

कई अलग-अलग उद्योगों को लाभ पहुंचाने के लिए एआई लगातार विकसित हो रहा है। मशीनों को गणित, कंप्यूटर विज्ञान, भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान और अन्य पर आधारित अंतर-विषयक दृष्टिकोण का उपयोग करके तार-तार किया जाता है।

एल्गोरिदम अक्सर कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संरचना में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जहां सरल एल्गोरिदम का उपयोग सरल अनुप्रयोगों में किया जाता है, जबकि अधिक जटिल एल्गोरिदम मजबूत कृत्रिम बुद्धिमत्ता को तैयार करने में मदद करते हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अनुप्रयोग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनुप्रयोग अनंत हैं। प्रौद्योगिकी को कई अलग-अलग क्षेत्रों और उद्योगों में लागू किया जा सकता है। दवा की खुराक का सुझाव देने, उपचार की पहचान करने और ऑपरेटिंग रूम में सर्जिकल प्रक्रियाओं में सहायता के लिए स्वास्थ्य देखभाल उद्योग में एआई का परीक्षण और उपयोग किया जा रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाली मशीनों के अन्य उदाहरणों में शतरंज खेलने वाले कंप्यूटर और स्व-चालित कारें शामिल हैं। इनमें से प्रत्येक मशीन को अपने द्वारा की जाने वाली किसी भी कार्रवाई के परिणामों को तौलना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक कार्रवाई अंतिम परिणाम को प्रभावित करेगी। शतरंज में, अंतिम परिणाम खेल जीतना है। सेल्फ-ड्राइविंग कारों के लिए, कंप्यूटर सिस्टम को सभी बाहरी डेटा का हिसाब रखना होगा और इसकी गणना इस तरह से करनी होगी कि टकराव को रोका जा सके।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के वित्तीय उद्योग में भी अनुप्रयोग हैं, जहां इसका उपयोग बैंकिंग और वित्त में असामान्य डेबिट कार्ड के उपयोग और बड़े खाते में जमा जैसी गतिविधि का पता लगाने और चिह्नित करने के लिए किया जाता है - ये सभी बैंक के धोखाधड़ी विभाग की मदद करते हैं। ट्रेडिंग को सुव्यवस्थित और आसान बनाने में मदद के लिए एआई के अनुप्रयोगों का भी उपयोग किया जा रहा है। यह प्रतिभूतियों की आपूर्ति, मांग और मूल्य निर्धारण को अनुमान लगाना आसान बनाकर किया जाता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रकार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता को दो अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

कमजोर और मजबूत। कमजोर कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक विशेष कार्य को पूरा करने के लिए डिज़ाइन की गई प्रणाली का प्रतीक है। कमजोर एआई सिस्टम में ऊपर दिए गए शतरंज उदाहरण जैसे वीडियो गेम और अमेज़ॅन के एलेक्सा और ऐप्पल के सिरी जैसे व्यक्तिगत सहायक शामिल हैं। आप सहायक (चैटबाट) से एक प्रश्न पूछते हैं और वह आपको इसका उत्तर देता है।

मजबूत कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियाँ ऐसी प्रणालियाँ हैं जो मानव-सदृश माने जाने वाले कार्यों को अंजाम देती हैं। ये अधिक जटिल और उलझी हुई प्रणालियाँ होती हैं। उन्हें उन स्थितियों को संभालने के लिए प्रोग्राम किया गया है जिनमें उन्हें किसी व्यक्ति के हस्तक्षेप के बिना समस्या हल करने की आवश्यकता हो सकती है। इस प्रकार की प्रणालियाँ स्व-चालित कारों या अस्पताल के ऑपरेटिंग रूम जैसे अनुप्रयोगों में पाई जा सकती हैं।

एआई के 4 प्रकार क्या हैं?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता को चार प्रकारों में से एक में वर्गीकृत किया जा सकता है।

- रिएक्टिव एआई इनपुट के एक सेट के आधार पर आउटपुट को अनुकूलित करने के लिए एल्गोरिदम का उपयोग करता है। उदाहरण के लिए, शतरंज खेलने वाले एआई प्रतिक्रियाशील सिस्टम हैं जो गेम जीतने के लिए सर्वोत्तम रणनीति का अनुकूलन करते हैं। रिएक्टिव एआई काफी स्थिर होता है, सीखने या नई स्थितियों के अनुकूल ढलने में असमर्थ होता है। इस प्रकार, यह समान इनपुट दिए जाने पर समान आउटपुट देगा।

- सीमित मेमोरी एआई पिछले अनुभव के अनुरूप ढल सकता है या नए अवलोकनों या डेटा के आधार पर खुद को अपडेट कर सकता है। अक्सर, अद्यतन करने की मात्रा सीमित होती है (नाम) और मेमोरी की लंबाई अपेक्षाकृत कम होती है। उदाहरण के लिए, स्वायत्त वाहन "सड़क को पढ़ सकते हैं" और नई स्थितियों के अनुकूल ढल सकते हैं, यहाँ तक कि पिछले अनुभव से "सीख" भी सकते हैं।

- थ्योरी-ऑफ़-माइंड एआई पूरी तरह से अनुकूली है और इसमें सीखने और पिछले अनुभवों को बनाए रखने की व्यापक क्षमता है। इस प्रकार के एआई में उन्नत चैट-बॉट शामिल हैं जो ट्यूरिंग टेस्ट पास कर सकते हैं, जिससे किसी व्यक्ति को यह विश्वास हो जाता है कि एआई एक इंसान है। उन्नत और प्रभावशाली होते हुए भी, ये एआई आत्म-जागरूक नहीं हैं।

- आत्म-जागरूक एआई, जैसा कि नाम से पता चलता है, अपने अस्तित्व के प्रति संवेदनशील और जागरूक हो जाते हैं। अभी भी विज्ञान कथा के क्षेत्र में, कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि एआई कभी भी सचेत या "जीवित" नहीं होगा।

आज एआई का उपयोग कैसे किया जाता है?

एआई का आज विभिन्न स्तरों के परिष्कार के साथ बड़े पैमाने पर अनुप्रयोगों में उपयोग किया जाता है। अनुशंसा एल्गोरिदम जो सुझाव देते हैं कि आपको आगे क्या पसंद आ सकता है, वे लोकप्रिय एआई कार्यान्वयन हैं, जैसे चैटबॉट हैं जो वेबसाइटों पर या स्मार्ट स्पीकर (उदाहरण के लिए, एलेक्सा या सिरी) के रूप में दिखाई देते हैं। एआई का उपयोग मौसम और वित्तीय पूर्वानुमान के संदर्भ में भविष्यवाणियां करने, उत्पादन प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और अनावश्यक संज्ञानात्मक श्रम के विभिन्न रूपों (जैसे, कर लेखांकन या संपादन) में कटौती करने के लिए किया जाता है। एआई का उपयोग गेम खेलने, स्वायत्त वाहनों को संचालित करने, प्रक्रिया भाषा और बहुत कुछ करने के लिए भी किया जाता है।

ओपन एआई ने 2022 के अंत में अपना चेटजीपीटी टूल जारी किया। 2023 में हर महीने लाखों उपयोगकर्ताओं के जुड़ने से इसकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ी। चेटजीपीटी को एक कमजोर एआई माना जाता है, लेकिन यह सख्ती से प्रतिक्रियाशील नहीं है और विभिन्न प्रकार के विषयों पर रचनात्मक रूप से प्रतिक्रिया दे सकता है।

स्वास्थ्य देखभाल में एआई का उपयोग कैसे किया जाता है?

स्वास्थ्य देखभाल सेटिंग्स में, एआई का उपयोग निदान में सहायता के लिए किया जाता है। एआई स्कैन में छोटी विसंगतियों की पहचान करने में बहुत अच्छा है और रोगी के लक्षणों और महत्वपूर्ण बातों से बेहतर निदान कर सकता है। एआई का उपयोग मरीजों को वर्गीकृत करने, मेडिकल रिकॉर्ड बनाए रखने और ट्रैक करने और स्वास्थ्य बीमा दावों से निपटने के लिए भी किया जाता है। माना जाता है कि भविष्य के नवाचारों में एआई-सहायता प्राप्त रोबोटिक सर्जरी, आभासी नर्स या डॉक्टर और सहयोगात्मक नैदानिक निर्णय शामिल होंगे।

कोलेस्ट्रॉल कम करने की देशी दवा

श्रीमती आर. सुजा, क.का.प्र./बिल्स

मुझे अपनी सहेली सविता ने कोलेस्ट्रॉल कम करने की देशी दवा के बारे में मुझे बताया जिसे मैं यहाँ साझा कर रही हूँ। निम्नलिखित सामग्रियों का 1 कप रस लें।

1. लहसुन
2. अदरक
3. नींबू
4. सेब का सिरका

उपरोक्त सभी चीजों को मिलाकर एक मोटे तले वाले बर्तन में धीमी आंच पर लगभग 30 से 40 मिनट तक गर्म करें।
- फिर आंच बंद कर दें और ठंडा होने दें फिर मिक्स करें। इस मिक्सर में 1 कप शहद मिलाएं। अगर आप मधुमेह से पीडित हैं तो शहद न लें।
उक्त मिश्रण को एक बोतल में डालें। रोज खाली पेट एक चम्मच का सेवन करें।

यदि आपको हृदय की समस्या है तो प्रत्येक भोजन के 1/2 घंटे पहले एक चम्मच लें। उपरोक्त दवा हृदय ब्लॉकों के लिए समाधान है और यहां तक कि हमारे आंतरिक अंगों में जमा कोलेस्ट्रॉल को कम करने के लिए भी है।

मैं यह दवा लेने को इसलिए कह रही हूँ कि जब हम एक विवाह समारोह में भाग लेने के लिए अपने गाँव गए तो मेरे भाई को दिल का दौरा पड़ा। तब डॉक्टर ने उसे बाईपास सर्जरी का सुझाव दिया था। मैंने डॉक्टर से भी सलाह ली, उन्होंने भी सर्जरी की सलाह दी।

चूंकि मैंने एक्यूपंक्चर में एमडी किया है, इसलिए मैंने अपने भाई को उपरोक्त औषधीय इलाज का सुझाव दिया। उन्होंने मुझ पर पूरा विश्वास किया और मेरी सलाह के अनुसार उपरोक्त दवा का सेवन करना शुरू कर दिया, एक महीने के बाद जब उन्होंने दोबारा डॉक्टर से सलाह ली तो वह बदलाव देखकर आश्चर्यचकित रह गए और कहा कि सर्जरी की आवश्यकता नहीं है और उन्हें दवाएं जारी रखने को कहा।

उसके बाद भी यही समस्या मेरे पति के भाई के सामने आई, चूंकि यह आपातकालीन स्थिति थी, इसलिए एक साइड की हार्ट सर्जरी की गई। और आगे डाक्टर ने उनके हार्ट के दूसरे साइड में भी सर्जरी करने को कहा। लेकिन इसकी ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि उनके लिए भी उक्त देशी दवा आज़माई गई थी।

वास्तव में मेरे भाई का खराब कोलेस्ट्रॉल बहुत जल्द कम हो गया। यहां मेरी ओर से सुझाव है कि हमें कुछ शारीरिक व्यायाम भी करने होंगे जैसे चलना, प्राणायाम आदि हमेशा करते रहना चाहिए। यहां तक कि हमें खान-पान और स्वस्थ आदतों जैसे धूम्रपान न लेना और शराब पीने से बचना आदि पर भी ध्यान देना चाहिए।

सबसे पहले हमें अपनी जीवनशैली का ध्यान रखना चाहिए जो बेहद जरूरी है। अच्छी आदतें विकसित करें, उचित अनुशासन अपनाएं और अपने मन को शुद्ध करने के लिए ध्यान करें ताकि हम अपने परिवार तथा समाज में सभी जरूरतों की मदद करने के लिए एक बेहतर इन्सान बन सकें।

My friend Savita told me about the indigenous medicine that reduces cholesterol, which I am sharing here. Take 1 cup juice of the following ingredients.

1. Garlic
2. Ginger
3. Lemon
4. Apple Cider Vinegar

o Mix all the above mentioned things and heat them in a thick bottom vessel on low flame for about 30 to 40 minutes.

o Then turn off the flame and let it cool down then mix.

o Add 1 cup honey to this mixer. Do not take honey if you are suffering from diabetes.

o Pour the above mixture into a bottle. Consume one teaspoon daily on an empty stomach.

If you have heart problems, take one spoon 1/2 an hour before each meal.

The above medicine is the solution for heart blocks and even for reducing the cholesterol deposited in our internal

organs. I suggest this medicine because my brother had a heart attack when we went to our home town to attend a marriage function. Then the doctor suggested him for bypass surgery. I consulted doctor, he also advised surgery.

Since I have done MD in Acupuncture, I suggested the above medicinal treatment to my brother. He had full faith in me and started taking the above medicine as per my advice, after a month when he again consulted the doctor, he was surprised to see the change and said that surgery is not required and he can continue with the medicines. After that it was observed that infact my brother's bad cholesterol came down very quickly.

Even after that my husband's brother faced the same problem, since it was an emergency, one side heart surgery was done. And further the doctor asked to do surgery on the other side of his heart as well. But it was not necessary, because the above indigenous medicine was tried for him also.

Here my suggestion is that some physical exercises like walking, pranayama etc. should always be done. Even we should pay attention to food habits and healthy habits like not smoking and avoiding drinking alcohol etc.

First of all we should take care of our lifestyle which is very important. Develop good habits, adopt proper discipline and meditate to purify our mind so that we can become a better human being to help all the needs in our family and society.

वजन कम करने में सहायक योग

श्री आर. रघुनाथन, क.का.प्र.

योग वजन कम करने में सहायक हो सकता है। वजन कम करने में निम्नलिखित योगासन सहायक सिद्ध होते हैं।

1. सूर्य नमस्कार
2. वीरभद्रासन
3. भुजंगासन
4. धनुरासन
5. त्रिकोणासन

सूर्य नमस्कार

योग के ये आसन सबसे प्रसिद्ध है। सूर्य नमस्कार का मतलब होता है, सूरज का अभिवादन करना। इस योगासन में 12 योग मुद्राओं को शामिल किया गया है। ये योगासन पूरे शरीर के लिए फायदेमंद होता है। सूर्य नमस्कार को 10 से 15 मिनट तक करना काफी होता है। इसमें शरीर की पानी की मात्रा संतुलित रहती है और अनावश्यक तत्व बाहर निकल जाते हैं। इस आसन से शरीर के लगभग हर अंग की कसरत हो जाती है।

1. प्रणाम आसन (Prayer pose)
2. हस्तउत्तानासन (Raised Arms pose)
3. हस्तपाद आसन (Hand to Foot pose)
4. अश्व संचालन आसन (Equestrian pose)
5. दंडासन (Stick pose)
6. अष्टांग नमस्कार (Salute With Eight Parts Or Points)
7. भुजंग आसन (Cobra pose)
8. पर्वत आसन (Mountain pose)
9. अश्वसंचालन आसन (Equestrian pose)
10. हस्तपाद आसन (Hand to Foot pose)
11. हस्तउत्थान आसन (Raised Arms pose)
12. ताड़ासन (Tadasana)

वीरभद्रासन

वीरभद्रासन को योद्धा मुद्रा कहते हैं। इस आसन में आपकी पोजीशन पहाड़ों पर जाने वाली मुद्रा के जैसी होती है। इसमें अपने पैर को पीछे की ओर खींचते हुए दूसरे पैर को आगे कूदने की पोजीशन में बना लें। फिर हाथों को जोड़कर सिर को ऊपर तक से जाएं। अब अपने हाथ को छाती के सामने ले जाते हुए खींचे हुए पैरों को सीधा कर लें। फिर दूसरे पैर को अभी भी 90 डिग्री पर रखें और दोनों हाथों को खींचकर बाहर की तरफ फैला लें।

वीरभद्रासन से लाभ :-

- हाथ, पैर और कमर को मजबूती प्रदान करता है।
- शरीर में संतुलन बढाता है, सहनशीलता बढती है।
- बैठ कर कार्य करने वालों के लिए अत्यंत लाभदायक
- कंधो के जकड़न में अत्यंत प्रभावशाली है।
- कंधो के तनाव में तुरंत मुक्त करता है।

वीरभद्रासन की सावधानियाँ :-

- अगर आप रीढ की हड्डी के विकारों से पीड़ित है य किसी पुरानी बीमारी से पीड़ित हैं तो चिकित्सक से परामर्श ले कर ही ये आसन करें।
- उच्च रक्तचाप वाले मरीज़ यह आसन न करें।
- वीरभद्रासन गर्भवती महिलाओ के लिए दूसरे और तीसरे तिमाही में अत्यन्त लाभदायक है। आप इस आसन को करते समय दीवार का सहारा लें। इस आसन को करने से पहले चिकित्सक की सलाह अवश्य लें।
- अगर आप दस्तग्रस्त हैं या हाल में ही इससे पीड़ित थे तो ये आसन न करें।
- अगर आप को घुटनों में दर्द है य गठिया की बीमारी है तो घुटनों के पास सहारे का उपयोग करें।

भुजंगासन

भुजंगासन फन उठाए हुएँ साँप की भाँति प्रतीत होता है, इसलिए इस आसन का नाम भुजंगासन है। भुजंगासन सूर्यनमस्कार और पद्मसाधना का एक महत्त्वपूर्ण आसान है जो हमारे शरीर के लिए अति लाभकारी है। यह छाती और कमर की मासपेशियो को लचीला बनाता है और कमर में आये किसी भी तनाव को दूर करता है। मेरुदंड से संबंधित रोगियों को अवश्य ही भुजंगासन बहुत लाभकारी साबित होगा। स्त्रियों में यह गर्भाशय में खून के दौरे को नियंत्रित करने में सहायता करता है। गुर्दे से संबंधित रोगी हो या पेट से संबंधित कोई भी परेशानी, ये आसान सा आसन सभी समस्याओं का हल है।

भुजंगासन के लाभ

- कंधे और गर्दन को तनाव से मुक्त कराना।
- पेट के स्नायुओं को मज़बूत बनाना।
- संपूर्ण पीठ और कंधों को पुष्ट करना।
- रीढ़ की हड्डी का उपरवाला और मंझला हिस्सा ज़्यादा लचीला बनाना।
- थकान और तनाव से मुक्ति पाना।
- अस्थमा तथा अन्य श्वास प्रश्वास संबंधी रोगों के लिए अति लाभदायक (जब अस्थमा का दौरा जारी हो तो इस आसन का प्रयोग ना करें)।

भुजंगासन के अंतर्विरोध

- गर्भवती महिलाएँ, या जिनकी पसली या कलाई में कोई दरार हो, या हाल ही में पेट का ऑपरेशन हुआ हो, जैसे के हर्निया, उन्हें यह आसन टालना होगा।
- कारपेल टनेल सिंड्रोम के मरीज भी भुजंगासन ना करें।
- यदि आप लंबे समय से बीमार हों या रीढ़ की हड्डी के विकार से ग्रस्त रह चुके हों तो, भुजंगासन का अभ्यास प्रशिक्षक के निगरानी में ही करें।

धनुरासन

धनुरासन को धनुष आसन या धनुषासन (Bow Pose) भी कहा जाता है। इस आसन को करने के दौरान शरीर धनुष के जैसा आकार बनाता है। धनुरासन को हठ योग के 12 मूल आसनों में से एक माना जाता है। ये आसन योग विज्ञान में पीठ में स्ट्रेचिंग या खिंचाव पैदा करने के लिए बताए गए प्रमुख तीन आसनों में एक है । इस आसन के अभ्यास से पूरी पीठ को बढ़िया खिंचाव मिलता है। इस आसन के अभ्यास से कमर में लचीलापन बढ़ता है और कमर मजबूत होती है।

धनुरासन के लाभ

- पीठ / रीढ़ की हड्डी और पेट के स्नायु को बल प्रदान करना ।
- जननांग संतुलित रखना ।
- छाती, गर्दन और कंधोँ की जकड़न दूर करना ।
- हाथ और पेट के स्नायु को पुष्टि देना ।
- रीढ़ की हड्डी क़ो लचीला बनाना ।
- तनाव और थकान से निजात ।
- मलावरोध तथा मासिक धर्म में सहजता ।
- गुर्दे के कार्य में सुव्यवस्था ।

धनुरासन के अंतर्विरोध

यदि आप को उच्च या निम्न रक्तदाब, हर्निया, कमर दर्द, सिर दर्द, माइग्रेन (सिर के अर्ध भाग में दर्द), गर्दन में चोट/क्षति, या हाल ही में पेट का ऑपरेशन हुआ हो, तो आप कृपया धनुरासन ना आजमाएँ ।

- गर्भवती महिलाएँ धनुरासन का अभ्यास ना करें।

त्रिकोणासन

इस योगासन में अपने दोनों पैरों को फैलाकर हाथों को बाहर की ओर खोलते हैं। फिर सीधे हाथ को धीरे-धीरे नीचे की तरफ सीधे पैर की ओर लाते हैं। अब कमर को नीचे की ओर करते हुए नीचे देखना होता है। इसके बाद सीधी हथेली को जमीन पर रखते हैं। वहीं उल्टे उल्टे हाथ को ऊपर की ओर ले जाते हैं। यह प्रक्रिया दूसरी तरफ से भी दोहराई जाती है।

प्राकृतिक रूप से वजन कम करना कैसा रहेगा?

अब हमें अपना वजन कम करने के लिए नींद खराब नहीं करनी होगी। कितनी बार हमने यह सुना होगा कि “मुझे लगता है कि मेरा वजन बढ़ गया है मुझे पतला होना होगा” और यह बात वजन कम करने के तरीकों पर भारी वाद विवाद में बदल जाती है। शरीर को सही आकार में लाने के लिए जिम में व्यायाम करना, अपनी जिव्हा को केवल स्वास्थ्यप्रद खाने की आदत डालना हमने यह सब आजमाया होगा। इसी क्रम में कुछ ऐसा भी जोड़ा जाए तो कैसा रहेगा, जो प्राकृतिक हो, जिसका कोई दुष्प्रभाव भी न हो और जो एकदम आसान हो, जिसके लिए दिन में मुश्किल से 15-20 मिनट ही देने हों।
यदि हम किसी वजन कम करने वाले (कोर्स) कार्यक्रम में हैं, अपने शरीर के मौलिक उपापचय की दर को नियमित जाँचते होंगे। अपने चयापचयी दर (BMR - Basal Metabolic Rate) को जानकर हम अपना कैलोरी ग्रहण कम करते हैं और वजन कम होता है। जब हम ध्यान करते हैं तो हमारा चयापचयी दर सहज ही कम होता है । अर्थात शरीर का अतिरिक्त कैलोरी ग्रहण कम हो जाता है। वजन कम होना ध्यान का एक सहज परिणाम है। इसके साथ योगासन करके हम अपना वजन आसानी से घटा सकते हैं ।

ध्यान, एक सहज व शक्तिशाली तकनीक है। आश्चर्य की बात है कि कोई चीज़ जो मन से संबंधित है किस तरह वजन कम करने में काम आएगी। आइए देखें, ध्यान प्राकृतिक रूप से वजन कम करने में कैसे सहायक है। यदि हम किसी वजन कम करने वाले (कोर्स) कार्यक्रम में हैं, हम अपने शरीर के मौलिक उपापचय की दर को नियमित जाँचते होंगे। अपने चयापचयी दर को जानकर अपना कैलोरी ग्रहण कम करते हैं और वजन कम होता है। जब हम ध्यान करते हैं हमारा सहज ही कम होता है । अर्थात हमारे शरीर का अतिरिक्त कैलोरी ग्रहण कम हो जाता है। वजन कम होना ध्यान का एक सहज परिणाम है।

अपने व्यायाम में थोड़ा बदलाव लाएँ

हमने ध्यान दिया होगा क़ि जैसे ही हम व्यायाम बंद करते हैं अपहा वजन बढ़ने लगता है। ऐसा इसलिए होता है क़ि हम कैलोरी खर्च किये बिना (याने शारीरिक श्रम किये बिना) खाते रहते हैं जिससे वजन बढ़ जाता है। जिम में व्यायाम से हमारी भूख तो बढ़ जाती है लेकिन भोजन को आत्मसात करने की क्षमता बढ़े यह आवश्यक नहीं है।
योग व ध्यान के अभ्यास से भोजन को आत्मसात करने की क्षमता बढ़ जाती है और अधिक कैलोरी वाले भोजन की चाह स्वतः कम हो जाती है। इसलिए जब हम भूखे होते हैं तो भी कम मात्रा में भोजन से ही तृप्त हो जाते हैं । यह शरीर के वजन पर लंबे समय तक प्रभाव डालता है। यदि हम कुछ दिन व्यायाम नही कर पाते हैं फिर भी अचानक से अपना वजन नही बढ़ता।

इसलिए सबसे मेरा अनुरोध है कि आप रोज 15-20 मिनट तक ध्यान एवं व्यायाम करें जिससे मोटापा कम हो जाएगी और आप स्वसथ भी रहेंगे ।

समान नागरिक संहिता

श्री जे. जयरामन, निजी सचिव

यूनिफॉर्म सिविल कोड यानि समान नागरिक संहिता, जिसका सामान्य अर्थ है कि समान नागरिक संहिता (यूसीसी) भारत के लिए एक कानून बनाने का आह्वान करती है, जो विवाह तलाक, विरासत, गोद लेने जैसे मामलों में सभी धार्मिक समुदायों पर लागू होगा। यह संहिता संविधान के अनुच्छेद 44 के अंतर्गत आती है, जो यह बताती है कि भारत समस्त राज्य के पूरे क्षेत्र में नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता को सुरक्षित करने का प्रयास करेगा।

समान नागरिक संहिता की उत्पत्ति

समान नागरिक संहिता (यूसीसी) की उत्पत्ति औपनिवेशिक भारत में तब हुई जब ब्रिटिश सरकार ने 1835 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें अपराधों, सबूतों और अनुबंधों से संबंधित भारतीय कानून के संहिताकरण में एकरूपता की आवश्यकता पर बल दिया गया, विशेष रूप से सिफारिश की गई कि हिंदुओं और मुसलमानों के व्यक्तिगत कानूनों को रखा जाए। लेकिन हिंदुओं और मुसलमानों के एडब्ल्यूएस को इस तरह के संहिताकरण से बाहर रखे जाने की सिफारिश की गई।

ब्रिटिश शासन के अंत में व्यक्तिगत मुद्दों से निपटने वाले कानूनों में वृद्धि ने सरकार को 1941 में हिंदू कानून को संहिताबद्ध करने के लिए बी एन राव समिति बनाने के लिए मजबूर किया। हिंदू कानून समिति का कार्य सामान्य हिंदू कानूनों की आवश्यकता के प्रश्न की जांच करना था। समिति ने, शास्त्रों के अनुसार, एक संहिताबद्ध हिंदू कानून की सिफारिश की, जो महिलाओं को समान अधिकार देगा। 1937 के अधिनियम की समीक्षा की गई और समिति ने हिंदुओं के लिए विवाह और उत्तराधिकार की नागरिक संहिता की सिफारिश की।

क्या करेगी समान नागरिक संहिता?

स.ना.सं. (यूसीसी) का उद्देश्य महिलाओं और धार्मिक अल्पसंख्यकों सहित अम्बेडकर द्वारा परिकल्पित कमजोर वर्गों को सुरक्षा प्रदान करना है, साथ ही एकता के माध्यम से राष्ट्रवादी उत्साह को बढ़ावा देना है। जब यह कोड बनाया जाएगा तो यह उन कानूनों को सरल बनाने का काम करेगा जो वर्तमान में धार्मिक मान्यताओं जैसे हिंदू कोड बिल, शरीयत कानून और अन्य के आधार पर अलग-अलग हैं। यह संहिता विवाह समारोहों, विरासत, उत्तराधिकार, गोद लेने के आसपास के जटिल कानूनों को सभी के लिए एक बना देगी। फिर वही नागरिक कानून सभी नागरिकों पर लागू होगा चाहे उनकी आस्था कुछ भी हो।

समान नागरिक संहिता के लाभ क्या है?

• लैंगिक समानता – पूरे देश में एक समान नागरिक संहिता के लागू होने से देश से लैंगिक भेदभाव को खत्म करने में मदद मिलेगी। उदाहरण के लिए, विभिन्न धर्मों के अनुसार, विरासत, विवाह आदि पुरुष प्रधान हैं। आजादी के सात दशक बाद भी महिलाएं समानता के लिए संघर्ष कर रही हैं। ऐसे में सभी लिंग, जाति के लिए एकसमान कानून बना रहेगा।

• राष्ट्रीय अखंडता को बढ़ावा – यूसीसी के गठन से राष्ट्रीय अखंडता को बढ़ावा मिलेगा।

• धर्मनिरपेक्षता की आधारशिला – हमारे संविधान की प्रस्तावना में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि भारत एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष राज्य है। लेकिन यह सोचने वाली बात है कि क्या भारत के नागरिक वास्तविक धर्मनिरपेक्षता का आनंद ले रहे हैं। यहां आजादी के दशकों बाद भी अलग-अलग धर्मों के लिए अलग-अलग व्यक्तिगत कानून मौजूद हैं। ऐसे में यूसीसी धर्मनिरपेक्षता की आधारशिला के रूप में सभी धर्मों के लोगों के लिए एक समान कार्य करेगा।

• समाज सुधार – एक बार जब यूसीसी पूरे देश में बन जाएगा, तो भारत की इस सदी में एक और सामाजिक सुधार होगा। उदाहरण के लिए, भारतीय संदर्भ में, मुस्लिम महिलाओं को विवाह, तलाक आदि के संबंध में व्यक्तिगत कानूनों से वंचित किया जाता है। इसके विपरीत, विभिन्न मुस्लिम राष्ट्र जैसे पाकिस्तान, बांग्लादेश, तुर्की, मोरक्को आदि महिलाएं संहिताबद्ध व्यक्तिगत कानूनों का आनंद लेती हैं। तो यूसीसी के लागू होने के बाद भारतीय महिलाओं को भी एक संहिताबद्ध व्यक्तिगत कानून का आनंद मिलेगा। इसलिए, देश भर में एक और सामाजिक सुधार होना निश्चित है।

समान नागरिक संहिता के नुकसान?

• साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए खतरा – नागरिक संहिता के संबंध में संभावित गलतफहमी ने विभिन्न धर्मों विशेषकर अल्पसंख्यकों में भय पैदा कर दिया। यह अक्सर कई धर्मों द्वारा देखा जा रहा है कि यूसीसी का उद्देश्य उनके धार्मिक रीति-रिवाजों और मूल्यों के खिलाफ है। ऐसे में यह देश के सांप्रदायिक भावना को नष्ट कर सकता है।

• व्यक्तिगत स्वतंत्रता में सरकार का हस्तक्षेप – कई लोगों द्वारा यह अनुमान लगाया जा रहा है कि इस नीति के जरिए व्यक्तियों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता में सरकार का हस्तक्षेप बना रहेगा। लेकिन समान नागरिक संहिता का उद्देश्य केवल सभी नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना है।

• अभी लागू करने का सही समय नहीं – देशभर में मुस्लिम समुदाय समान नागरिक संहिता को लागू करने का विरोध कर रहा है। साथ ही, वे तर्क दे रहे हैं कि इस विषय को अन्य हाल ही के मुद्दों के साथ-साथ स्कूलों के भगवाकरण, गोमांस के मुद्दों आदि के संबंध में अधिकारियों की चुप्पी को भी ध्यान में रखना चाहिए और आगे अल्पसंख्यकों पर बहुमत के शासन के रूप में बताया जा रहा है।

• भारत की विविधता के कारण कठिनाइयाँ – हमारे राष्ट्र की व्यापक विविधता के कारण समान नागरिक संहिता का कार्यान्वयन एक बेहद कठिन कार्य है। देश की भारी विविधता को एक सूत्र में पिरो कर एक नियम में बांधना बेहद मुश्किल और बोझिल काम है।

जैसा कि स्पष्ट है कि यूनिफॉर्म सिविल कोड भारत में सभी के लिए एक समान नियम लेकर आएगा ऐसे में विभिन्न सांप्रदायिक मुद्दों पर भी परिवर्तन किया जाना संभव है। लेकिन इस संहिता को लेकर देशभर में कुछ संप्रदायों में विरोध हो रहा है। हालांकि देखा जाए तो वास्तव में भारत को एक साथ आगे बढ़ाने के लिए सबको एक नियम के साथ चलना आवश्यक है।

चैट जीपीटी

श्री आर.एन. अनन्तपद्मनाभन, क.अ.अ.

चैटजीपीटी को ओपनएआई द्वारा विकसित एक एआई भाषा मॉडल है जो प्रयोक्ताओं को पाठ-आधारित प्रश्नों के लिए मानव जैसे जवाब प्रदान करने में सहायता करता है। इसका उद्देश्य संवाद में शामिल होकर विभिन्न विषयों पर जानकारी या सहायता प्रदान करना है। चैटजीपीटी कई परिस्थितियों में उपयोगी हो सकता है, जैसे सवालों का उत्तर देना, रचनात्मक सामग्री उत्पन्न करना, सुझाव देना, समझाना आदि।

चैटजीपीटी का विकास करने का कारण एआई की शक्ति का उपयोग करके मानव-कंप्यूटर इंटरैक्शन को बढ़ाना है। बड़े मात्रा में विभिन्न और उच्च गुणवत्ता वाले डेटा पर प्रशिक्षण देकर चैटजीपीटी को नमूनों, भाषा संरचनाओं और संदर्भ समझ की सीख मिलती है। इसे फिर यह ज्ञान का उपयोग करके संबद्ध और संदर्भानुरूपित प्रतिक्रियाएं उत्पन्न करने में सक्षम होता है।

चैटजीपीटी को मानवों को उत्साहित और ज्ञानवर्धक वार्तालाप का एक मूल्यवान साधन मान्या जाता है। इसकी सहायता से लोग मनोहारी चर्चाएं कर सकते हैं, जानकारी ढूंढ़ सकते हैं, विचारों का मंथन कर सकते हैं और यहां तक कि काल्पनिक या इतिहाससंबंधी चरित्रों के साथ बातचीत का अनुकरण भी कर सकते हैं। अंततः, चैटजीपीटी का उद्देश्य मानव-कंप्यूटर इंटरैक्शन को सुविधाजनक और आकर्षक एआई वार्तालाप अनुभव प्रदान करना है।

Chatgpt is an AI language model developed by OpenAI to assist users in generating human-like responses to text-based prompts. It is designed to engage in conversation and provide information or assistance on a wide range of topics. चैटजीपीटी can be useful in various scenarios, such as answering questions, generating creative content, offering suggestions, providing explanations, and more.

The purpose of developing चैटजीपीटी is to leverage the power of AI to create a conversational agent that can understand and generate human-like text. By training on a vast amount of diverse and high-quality data, चैटजीपीटी learns patterns, language structures, and contextual understanding. It can then apply this knowledge to generate coherent and contextually appropriate responses.

Chatgpt has proven to be a valuable tool for users who seek interactive and informative conversations. It allows people to have engaging discussions, seek information, brainstorm ideas, and even simulate conversations with fictional or historical characters. Ultimately, Chatgpt aims to enhance human-computer interaction and provide users with a helpful and engaging AI conversational experience.

-2- The difference between Chatgpt और Google :
चैटजीपीटी और गूगल में उनकी प्रकृति, उद्देश्य और कार्यक्षमताओं में अंतर होता है। यहां कुछ मुख्य अंतर हैं:

1. एआई भाषा मॉडल बनाम सर्च इंजन: चैटजीपीटी एक एआई भाषा मॉडल है जो बातचीत में संलग्न होने और उपयोगकर्ताओं के इनपुट के लिए पाठ-आधारित प्रतिक्रियाएं प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसका मुख्य ध्यान मानव-जैसी प्रतिक्रियाएं उत्पन्न करने और संदर्भ को समझने पर है। वहीं, गूगल एक सर्च इंजन है जो वेब से जानकारी को खोजता है और उपयोगकर्ताओं के प्रश्नों के आधार पर जानकारी प्रदान करता है। Google का मुख्य कार्य है इंटरनेट पर संबंधित वेब पेज, दस्तावेज़, चित्र, वीडियो और अन्य ऑनलाइन संसाधनों की खोज और प्रदान करना।

2. वार्तालापीय इंटरैक्शन बनाम सर्च क्वेरी: चैटजीपीटी विशेष रूप से उपयोगकर्ताओं के साथ संवादात्मक और वार्तालापीय इंटरैक्शन के लिए प्रशिक्षित है। यह विभिन्न प्रोम्प्ट्स को समझ सकता है, बातचीत कर सकता है और संवादात्मक ढंग से जानकारी या सहायता प्रदान कर सकता है। वहीं, गूगल का सर्च इंजन मुख्य रूप से एक खोज उपकरण के रूप में कार्य करता है जहां उपयोगकर्ताओं अपने प्रश्नों को इनपुट करके वेब पर विशेष जानकारी या संसाधनों की खोज कर सकते हैं।

3. संदर्भ समझ: चैटजीपीटी को संदर्भ को समझने और उसे आधार बनाकर संयुक्त प्रतिक्रियाएं उत्पन्न करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। यह वार्तालापीय धारा बनाए रख सकता है और पिछली कथनों या प्रश्नों का संदर्भ दे सकता है। गूगल का सर्च इंजन, वहीं, खोजशब्दों के मिलान और प्रासंगिकता एल्गोरिदम के आधार पर संबंधित वेब पेज प्राप्त करता है, बिना आवश्यकता के उपयोगकर्ता के प्रश्न के संदर्भ को समझने के।

4. ज्ञान बेस: चैटजीपीटी की प्रतिक्रियाएं उस प्रशिक्षण पर आधारित होती हैं जिसे उसे बहुत सारे डेटा, पुस्तकों, लेखों और वेबसाइटों से प्राप्त हुई है। हालांकि, इसका ज्ञान उसी सीमा तक सीमित होता है जहां पर उसे प्रशिक्षित किया गया है और यह वास्तविक समय में जानकारी या नवीनतम अपडेट की उपलब्धता नहीं हो सकती है। उपयोगकर्ताओं को यह जानना जरूरी है कि Google का सर्च इंजन वेब पेज का विस्तृत और निरंतर अपडेट होने वाला सूचकांक प्रदान करता है, जिससे उन्हें वर्तमान समय की विस्तृत जानकारी तक पहुंच मिलती है।

5. उपयोगकर्ता संवाद: चैटजीपीटी का डिज़ाइन उपयोगकर्ताओं के साथ वार्तालापीय इंटरैक्शन को सिमुलेट करने के लिए है, जिससे उपयोगकर्ताओं को अधिक संवादात्मक और आकर्षक अनुभव मिलता है। यह संवाद बनाए रख सकता है, स्पष्टीकरण के प्रश्न पूछ सकता है और संवादात्मक ढंग से प्रतिक्रियाएं प्रदान कर सकता है। Google का सर्च इंजन, वहीं, मुख्य रूप से एक सूची प्रारूप में खोज परिणाम प्रदान करता है, जिससे उपयोगकर्ता संबंधित लिंक पर क्लिक करके जानकारी का अन्वेषण कर सकते हैं।

ध्यान देने योग्य है कि चैटजीपीटी और गूगल एक दूसरे का पूरक हो सकते हैं। चैटजीपीटी सवालों का उत्तर देने, व्याख्या प्रदान करने और वार्तालापीय अनुभव प्रदान करने में सहायता कर सकता है, जबकि Google विस्तृत जानकारी और वास्तविक समय की वेब संसाधनों तक पहुंच प्रदान कर सकता है।

Chatgpt and Google are different in terms of their nature, purpose, and functionalities. Here are some key differences:

1. AI Language Model vs. Search Engine: Chatgpt is an AI language model designed to engage in conversation and provide text-based responses to user inputs. It focuses on generating human-like responses and understanding context. On the other hand, Google is a search engine that indexes and retrieves information from the web based on user queries. Google's primary function is to search and deliver relevant web pages, documents, images, videos, and other online resources.
2. Conversational Interaction vs. Search Queries: चैटजीपीटी is specifically trained for interactive and conversational interactions with users. It can understand and respond to a wide range of prompts, engage in dialogue, and provide information or assistance in a conversational manner. Google, on the other hand, primarily serves as a search tool where users input queries to find specific information or resources on the internet.

3. Contextual Understanding: Chatgpt is trained to understand context and generate coherent responses based on the input it receives. It can maintain a conversation flow and refer back to previous statements or queries.

Google's search engine, on the other hand, retrieves relevant web pages based on keyword matching and relevance algorithms, without necessarily understanding the context of the user's query.

4. Knowledge Base: Chatgpt's responses are generated based on the training it has received on a vast amount of data, including books, articles, and websites. However, its knowledge is limited to what it has been trained on and may not have access to real-time information or the latest updates.

In contrast, Google's search engine provides access to a vast and constantly updated index of web pages, giving users access to a wide range of current information.

5. User Interaction: Chatgpt is designed to sim ulate conversational interactions, providing a more interactive and engaging experience for users. It can maintain dialogue, ask clarifying questions, and provide responses in a conversational manner.

Google's search engine, on the other hand, primarily delivers search results in a list format, allowing users to click on relevant links and explore information further.

It's important to note that while Chatgpt and Google serve different purposes, they can complement each other. Chatgpt can assist with answering questions, offering explanations, and providing a conversational experience, while Google can provide a broader range of information and access to real-time web resources.

आपूर्ति शृंखला प्रबंधन

श्री टी.एच.वी.वी.स्वामी,
क.का.प्र.

आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन एक भावी एवीएनएल कॉर्पोरेट दृष्टिकोण है। आपूर्ति श्रृंखला को उत्पादों एवं सेवाओं के प्रवाह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो उत्पादों की उत्पत्ति से शुरू होता है एवं उपभोग उत्पादों पर समाप्त होता है। इसमें, सामग्री सूची एवं पूरी तरह से तैयार माल कच्चे माल की आवाजाही और भंडारण आदि शामिल हैं। इसमें कार्य प्रगति, इन्वेंट्री और पूरी तरह से तैयार माल आदि में लगने वाले कच्चे माल की आवाजाही एवं भंडारण शामिल है।

आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन का उद्देश्य उत्पादों एवं सेवाओं के उत्पादन, वितरण तथा शिपमेंट की निगरानी करना एवं ग्राहकों तक पहुँचाना है। कंपनियां आंतरिक इन्वेंट्री, वितरण पर इन्वेंट्री नियंत्रण क्षमताएं रख सकती हैं

लाभ:

• बेहतर ग्राहक संबंध एवं सेवा विकसित करता है।
• मांग में रहने वाले उत्पादों एवं सेवाओं के लिए बेहतर वितरण तंत्र बनाता है जिसमें शायद न्यूनतम देरी हो।
• उत्पादकता एवं व्यावसायिक कार्यों में सुधार करता है।
• गोदाम तथा परिवहन लागत को कम करता है।
• प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लागत को कम करता है।
• सही समय पर सही जगह पर सही उत्पादों की शिपिंग प्राप्त करने में सहायता करता है।
• जस्ट-इन-टाइम स्टॉक मॉडल के सफल निष्पादन का समर्थन करते हुए, इन्वेंट्री प्रबंधन को बढ़ाता है।
• वैश्वीकरण, आर्थिक विकास, उपभोक्ता अपेक्षाओं के विस्तार एवं संबंधित मतभेदों की चुनौतियों को अपनाने में कंपनियों को मदद मिलती है।
• अपशिष्ट को कम करने, लागत को कम करने और आपूर्ति श्रृंखला प्रक्रिया में दक्षता हासिल करने में कंपनियों की सहायता करता है।

नुकसान/कमियां:

सूक्ष्म विवरणों पर संभावित रूप से बहुत अधिक विस्तृत, व्यापक रणनीतिक दृष्टिकोण हमेशा की जरूरतों को पूरा कर सकता है। आख़िरकार, मूल्य श्रृंखला विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक क्षेत्र में दक्षता बढ़ाने के लिए, खंड दर खंड कंपनी संचालन का मूल्यांकन करना है।

पिछली ओएफबी आपूर्ति श्रृंखला क्षमताएं/मुद्दे:

1. इंडेंट जारी करने के बाद लंबी लीड अवधि।
2. आपूर्ति की खराब गुणवत्ता और कम नैतिक
3. रणनीतिक निर्णय लेने की कमी
4. दक्षताओं में क्रियाशील
5. उत्पादन एवं इन्वेंट्री होल्डिंग की उच्च लागत
6. वित्तीय निर्णय का अभाव
7. विनिर्माण में कुछ उत्पादों में उच्च अस्वीकृति दर।
8. बुनियादी सुविधाओं का कम उपयोग

आपूर्ति श्रृंखला मॉडल:

विनिर्माण क्षमता मॉडल - फोर्ड
लचीले विक्रेता प्रबंधन. क्षमताएं मॉडल- टोयोटा

अनुकूलन मॉडल--डेल
खुदरा बिक्री क्षमता मॉडल--वॉल मार्ट/बिग बाजार
ई-कॉमर्स मॉडल--फ्लिपकार्ट/अमेज़ॅन/बिग बास्केट

आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन भूमिका:

- समग्र दृष्टिकोण जिसमें उत्पाद विकास, कच्चे माल की खरीद, उपविभागों में विनिर्माण, विपणन, उत्पाद वितरण, लॉजिस्टिक समर्थन ग्राहक सेवा और बिक्री के बाद सेवा शामिल है।
- मांग और आपूर्ति का एकीकरण
- निर्णय लेने के सभी तीन स्तरों के साथ।

 * रणनीतिक * सामरिक * कार्यान्वयन

आपूर्ति श्रृंखला को एकीकृत करने में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका

सूचना प्रौद्योगिकियों की मदद से ग्राहक आपूर्ति श्रृंखला तक पहुंच पाते हैं, वे प्रमुखता की स्थिति में उभर सकते हैं। आपूर्ति श्रृंखला के लिए अंतर-संगठनात्मक सूचना प्रणाली की उन्नति के तीन विशिष्ट लाभ हैं। ये हैं -

विनिर्माण के लिए कम समय सीमा
- गुणवत्तापूर्ण उत्पाद तैयार करें
- नई तकनीकों को अपनाना निर्माण प्रक्रिया।
- निवेश का बेहतर रिटर्न (आरओआई)
- न्यूनतम इन्वेंट्री रखें.
- शेड्यूल को छोटा और लचीला बनाने के लिए के रूप में ज्यादा

- हितधारकों और ग्राहकों के बीच विश्वास बनाए रखने, अनुबंधों, लॉजिस्टिक्स के डेटाबेस को बनाए रखने के लिए आपूर्ति श्रृंखला के प्रवाह में दृश्यता
- ग्राहक सहायता प्रणाली उत्पाद

- वैश्विक व्यापार और मानकों को प्राप्त करना।
- सिस्टम में मूल्य श्रृंखला बनाए रखना
- ग्राहक मूल्य बनाने का लक्ष्य।

• लागत में कमी - प्रौद्योगिकी की प्रगति से सभी उत्पादों की तत्काल उपलब्धता हो गई है। इससे उत्पादों की लागत में कमी आती है।
• उत्पादकता - नए उपकरणों और सॉफ्टवेयर के आविष्कारों के कारण सूचना प्रौद्योगिकी के विकास से उत्पादकता में सुधार हुआ है। इससे उत्पादकता बहुत आसान हो जाती है और समय भी कम लगता है।
• सुधार और उत्पाद/बाज़ार रणनीतियाँ - हाल के वर्षों में न केवल प्रौद्योगिकियों में बल्कि बाज़ारों में भी भारी वृद्धि देखी गई है। ग्राहकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए नई रणनीतियाँ बनाई जा रही हैं और उत्पाद को बेहतर बनाने के लिए नए विचारों का प्रयोग किया जा रहा है।

इलेक्ट्रॉनिक डेटा इंटरचेंज (ईडीआई) में कंप्यूटर से कंप्यूटर तक एक मानक प्रारूप में व्यावसायिक दस्तावेजों की अदला-बदली शामिल है। यह मेल, कूरियर और फैक्स के पारंपरिक रूप के बजाय इलेक्ट्रॉनिक रूप से दो कंपनियों के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान की क्षमता और अभ्यास प्रस्तुत करता है।

एंटरप्राइज रिसोर्स प्लानिंग (ईआरपी) उपकरण

ईआरपी प्रणाली अब कई आईटी बुनियादी ढांचे का आधार बन गई है। कुछ ईआरपी उपकरण बाण, एसएपी, पीपलसॉफ्ट हैं। ईआरपी सिस्टम अब कई कंपनियों का प्रोसेसिंग टूल बन गया है। वे डेटा हड़प लेते हैं और वित्तीय, इन्वेंट्री और ग्राहक ऑर्डर जानकारी के प्रसंस्करण से संबंधित मैन्युअल गतिविधियों और कार्यों को कम कर देते हैं। ईआरपी सिस्टम में उच्च स्तर का एकीकरण होता है जो एकल डेटा मॉडल के उचित अनुप्रयोग के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, जो साझा डेटा का प्रतिनिधित्व करता है उसकी आपसी समझ में सुधार करता है और डेटा तक पहुंचने के लिए नियमों का एक सेट बनाता है।

प्रौद्योगिकी के विकास के साथ, हम कह सकते हैं कि दुनिया दिन-ब-दिन सिकुड़ती जा रही है। वैसे ही ग्राहकों की उम्मीदें भी बढ़ती जा रही हैं. साथ ही, कंपनियां अनिश्चित माहौल का शिकार हो रही हैं। इस दौड़ते बाजार में, एक कंपनी केवल तभी कायम रह सकती है जब वह इस तथ्य को स्वीकार करती है कि उनकी पारंपरिक आपूर्ति श्रृंखला एकीकरण को ग्राहक केंद्रित के साथ उनकी परिधि से परे विस्तारित करने की आवश्यकता है।
आपूर्ति श्रृंखला में रणनीतिक और तकनीकी हस्तक्षेप किसी कंपनी की खरीद और बिक्री सुविधाओं की भविष्यवाणी करने में बहुत बड़ा प्रभाव डालते हैं। एक कंपनी को स्पष्ट दृष्टि, मजबूत योजना और तकनीकी अंतर्दृष्टि के माध्यम से इंटरनेट की क्षमता का अधिकतम स्तर तक उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए। यह बेहतर आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और बेहतर प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए आवश्यक है।
हम देख सकते हैं कि कैसे इंटरनेट तकनीक, वर्ल्ड वाइड वेब, इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स, उभरते एआई उपकरण, आईओटी, ब्लॉक चेन आदि ने किसी कंपनी के व्यवसाय करने के तरीके को बदल दिया है। इन कंपनियों को अपने व्यापारिक साझेदारों के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रौद्योगिकी की शक्ति को स्वीकार करना चाहिए।

इंटरनेट और अन्य नेटवर्किंग लिंक अतीत के प्रदर्शन से सीखते हैं और ऐतिहासिक रुझानों का निरीक्षण करते हैं ताकि यह पता लगाया जा सके कि इसे भंडारण करने या खुदरा विक्रेताओं को भेजने के सर्वोत्तम एवं लागत प्रभावी तरीकों को भी शामिल करके कितना उत्पाद बनाया जाना चाहिए।

हिन्दी पखवाड़ा - प्रतियोगिताओं का परिणाम

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड मुख्यालय में दिनांक 14.09.2023 से 28.09.2023 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान आयेजित प्रतियोगिताओं तथा पुरस्कार प्राप्त कर्मजारियों का विवरण निम्नलमखित हैं।

क्रम सं. S.No	प्रतियोगिता Name of competitio	नाम, पदनाम तथा अनुभाग Name (S/Shri/Smt), Designation & Section	पुरस्कार /Prize
1.	स्टैंड-अप कॉमदी Stand-up Comedy	लिंडा जोसफिन, सहायक/इंजि. Linda Josephine, Asst/Engg	प्रथम / First
		दिनेश सिंह झाला, कंपनी सचिव Dinesh Singh Jhala, CS	द्वितीय / Second
		आर. सुजा, क.का.प्र/बिल्स R. Suja JWM/Bills	तृतीय / Third
2	हिन्दी वार्तालाप Conversation	आर. सुजा, क.का.प्र/बिल्स R. Suja JWM/Bills	प्रथम / First
		जननी, डीईओ (संविदा) Janani, DEO (Contract)	प्रथम / First
		ई. दक्षिणामूर्ति, क.का.प्र.(एसजी),संरक्षा E. Dhakshinamoorthy, JWM(SG)/ Safety	द्वितीय / Second
		ए. मुरुगन, क.का.प्र./संरक्षा A. Murugan, JWM/Safety	द्वितीय / Second
		पी. अनिता, क.का.प्र.(एस.जी.)/वित्त P.Anitha, JWM(SG)/Fin.	तृतीय / Third
		संदीप स्वाईन, क.का.प्र./वित्त Sandeep Swain, JWM/Fin.	तृतीय / Third
3	गीत प्रतियोगिता Hindi Song	डब्ल्यु.बी.एडिसन, क.का.प्र./संरक्षा W B Edison JWM/Safety	प्रथम / First
		के. गीता, क.का.प्र./उत्पादन K.Geetha JWM/Prod.	द्वितीय / Second
		संदीप स्वाईन, क.का.प्र./वित्त Sandeep Swain JWM/Fin.	तृतीय / Third
		के. गीता, क.का.प्र./उत्पादन K.Geetha JWM/Prod.	प्रथम / First
4	अंताक्षरी Antakshari	लिंडा जोसफिन, सहायक/इंजि. Linda Josephine, Asst/Engg	प्रथम / First
		एस. जयशंकर, क.का.प्र./वित्त S. Jaisanker, JWM/Fin	द्वितीय / Second
		शांति, निजी सचिव (संविदा) Smt. Shanti, PS (Contract)	द्वितीय / Second
		पी. अनिता, क.का.प्र.(एस.जी.)/वित्त P.Anitha, JWM(SG)/Fin.	तृतीय / Third
		संदीप स्वाईन, क.का.प्र./वित्त Sandeep Swain JWM/Fin.	तृतीय / Third

5	कहानी वाचन Story Reading	अंजना, मा.सं. /यु.पे. (संविदा) Anjana, Young Prof/HR (Contract)	प्रथम / First
		महिमई जीवा, कंटेंट लेखिका (संविदा) Mahimai Jeeva Content Writer	द्वितीय / Second
		बी. सुरेश, चार्जमैन/एमएम B.Suresh CM/MM	तृतीय / Third
6	हिन्दी प्रश्न मंच Hindi Quiz	पी.आर. प्रदीप, एक्जामिनर इं.नि.आ. P R Pradeep, Examiner/EFA	प्रथम / First
		टी. श्रीनिवासन, एक्जामिनर इं.नि.आ. T. Srinivasan Examiner /EFA	प्रथम / First
		प्रशांत कुमार, चार्जमैन आ.नि.मे. Prasant Kumar, CM/OFMK	द्वितीय / Second
		अमित कुमार, चार्जमैन आ.नि.मे. Amit Kumar, CM/OFMk	द्वितीय / Second
		बी. प्रवीण, क.का.प्र./ वित्त B. Praveen, JWM/Fin/AVNL	तृतीय / Third
		संदीप स्वाईन, क.का.प्र./वित्त Sandeep Swain JWM/Fin/AVNL	तृतीय / Third

त्रिभाषी कहावतें

HINDI	TAMIL	ENGLISH
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता।	தனி மரம் தோப்பாகாது.	One swallow does not make a summer.
ऊँट के मुँह में जीरा।	யானைப்பசிக்கு சோளப்பொறி.	A drop in the ocean.
कबूतर कबूतर के साथ, बाज बाज के साथ।	இனம் இனத்தோடு தான் சேரும்.	Birds of the same feather flock together.
काँटे से काँटा निकलता है।	முள்ளை முள்ளால் எடு.	Diamond cuts diamond.
कुआँ प्यासे के पास नहीं जाता।	கிணறு தாகமாக இருப்பவனிடம் வராது.	The well will never approach the thirsty.
कोयलों पर मुहर, हीरों की लूट।	கடுகு போன இடம் ஆராய்வர், பூசனிக்காய் போன இடம் தெரியாது.	Penny wise pound foolish.
गंगा गए तो गंगादास, जमुना गए तो जमुनादास	ஊருடன் கூடி வாழ்.	When in Rome, do as Romans do.
जो गरज़ते हैं वे बरसते नहीं।	குரைக்கிற நாய் கடிக்காது.	Barking dogs seldom bite.
ज्ञान ही शक्ति है।	அறிவே ஆற்றல்.	Knowledge is power.
तंदुरुस्ती हज़ार नियामत।	நோயற்ற வாழ்வே குறைவற்ற செல்வம்.	Health is wealth.
दाम करावे काम।	பணம் பத்தும் செய்யும்.	Money makes many.
नाच न जाने आंगन टेढ़ा।	ஆடத் தெரியாத நாட்டியக் காரிக்கு கூடம் கோணல்.	A bad workman quarrels with his tools.
पत्थर घिसते-घिसते महादेव बन जाता है।	பயிற்சி தேர்ச்சியைத் தரும்.	Practice makes a man perfect.
बंदर के हाथ आईना।	குரங்குக் கையில் பூமாலை.	A mirror/garland of flowers in the hand of a monkey.
मंजिल एक, राह अनेक।	ஊர் ஒன்று, அடையும் வழிகள் பல.	All roads lead to Rome.

पर्यावरण संरक्षण

श्री संदीप कुमार स्वाईन,
क.का.प्र.

आज से ही नहीं बल्कि प्राचीन काल से पर्यावरण का बहुत महत्व रहा है, क्योंकि प्रकृति का संरक्षण करने का अर्थ उसका पूजन है। हमारे देश में पर्वत, नदी, वायु, अग्नि, ग्रह-नक्षत्र, पेड़-पौधे आदि कहीं ना कहीं मानव के साथ जुड़े हुए हैं। लेकिन बढ़ते विकास के कारण इसे लगातार नुकसान पहुंच रहा है। पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व से जुड़े कुछ बिंदुओं को यहाँ संक्षेप में देखें -

* पर्यावरण संरक्षण वायु, जल एवं भूमि प्रदूषण को कम करता है।
* बायोडायवर्सिटी की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण संरक्षण का अत्यधिक महत्व है।
* पर्यावरण संरक्षण सभी के निरंतर विकास के लिए महत्वपूर्ण है।
* हमारे ग्रह को ग्लोबल वार्मिंग जैसे हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए भी पर्यावरण संरक्षण महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम के बारे में

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम संसद द्वारा 23 मई 1986 को पारित किया गया था तथा 19 नवंबर 1986 को लागू किया गया था। इसमें चार अध्याय तथा 26 धाराएं होती हैं। इसे पारित करने का मुख्य उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र द्वारा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में किए गए प्रयासों को भारत में विधि (कानून) बनाकर लागू करना है।

* प्रथम अध्याय की धारा- 1 के अनुसार इसका विस्तार संपूर्ण भारत में है। प्रथम अध्याय की धारा- 2 में पर्यावरण प्रदूषण परीसंकटमय पदार्थ अधि भोगी शब्दों की विशेष परिभाषा दी गई है।
* द्वितीय अध्याय में 4 धाराएं हैं जिनमें धारा-3 में पर्यावरण के संरक्षण एवं सुधार के लिए उपाय करने की केंद्र सरकार की शक्तियां, धारा- 5 में निर्देश देने एवं धारा- 6 में पर्यावरण प्रदूषण को विनियोजन करने हेतु नियमों का उल्लेख है।

* अध्याय 3 में पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण तथा उप शासन से संबंधित 7 से 17 अर्थात 11 धाराएं धारा 5 में उपलब्धियों का उल्लंघन करने पर दंड शक्ति संबंधित कानून का प्रावधान किया गया है।
* अध्याय 4 में 18 से 26 अर्थात कुल 9 धाराओं में कानून का वर्णन है। इनमें सद्भाव में की गई कार्यवाही को संरक्षण अपराधों का संज्ञान प्रत्यायोजन की शक्तियां नियम बनाने की शक्तियों का उल्लेख है।

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

आज के समय में पर्यावरण असंतुलित हो गया है। बढ़ती आबादी, औद्योगीकरण, प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग से आज विश्व का तापमान चिंतित स्तर पर बढ़ रहा है। पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता के प्रमुख कारण हैं :
ग्लेशियर पिघल के समुद्र में पानी के स्तर को बढ़ा रहे हैं, जिससे बाढ़ आ रही है।
पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, ग्रीनहाउस के प्रभाव, ग्लोबल वार्मिंग, ब्लैक होल इफ़ेक्ट आदि को कम या कंट्रोल करने के लिए पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता है। पेड़ कटते जा रहे हैं, जिससे वन क्षेत्र कम हो रहा है।

नदियों का जल भी प्रदूषित हो गया है जिसके कारण पर्यावरण संरक्षण बहुत जरूरी है। ग्लोबल वार्मिंग लगातार बढ़ रही है इसलिए भी पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता है। मीथेन गैसों के साथ-साथ कोलोरोफ्लोरो कार्बन्स की भारी उपस्थिति ने ओजोन परत को बड़े पैमाने पर नष्ट कर दिया है। ग्रह पर कई क्षेत्रों में अम्ल वर्षा और त्वचा कैंसर हुआ है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता बढ़ गयी है।

पर्यावरण संरक्षण के प्रकार

पर्यावरण संरक्षण के प्रकार कुछ इस तरह है, जो नीचे दी गई है:
जल संरक्षण (वॉटर कंजर्वेशन)
मृदा संरक्षण (सॉइल कंजर्वेशन)
वन संरक्षण (फॉरेस्ट कंजर्वेशन)

वन्य जीव संरक्षण (वाइल्डलाइफ रिजर्व)
जैव विविधता संरक्षण (डायवर्सिटी कंजर्वेशन)

पर्यावरण संरक्षण के तरीके क्या हैं?

अब जब आप पर्यावरण संरक्षण के अर्थ एवं महत्व से परिचित हो गए हैं, तो आइए उन मुख्य विधियों को देखें जिनके माध्यम से इसे प्रभावी रूप से सरल बनाया जा सकता है:

वन संरक्षण

हम जानते हैं कि पौधे एवं पेड़, हवा, भोजन के साथ-साथ हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले अन्य दैनिक उत्पादों के आवश्यक स्रोत हैं। वन विभिन्न जीवित प्राणियों का निवास स्थान हैं। वन संरक्षण का उद्देश्य यह है कि अधिक से अधिक पेड़ लगाना और साथ ही लोगों को पेड़ काटने से बचाना है क्योंकि पेड़ पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मृदा संरक्षण

पृथ्वी पर मिट्टी मुख्य तत्व है जो मिट्टी के कटाव, भूमि क्षरण एवं बाढ़ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पौधों के उत्पादन के लिए मिट्टी समृद्ध पोषक तत्वों से भरी होती है। उर्वरकों तथा जहरीले रसायनों के न्यूनतम उपयोग को सुनिश्चित करने के साथ-साथ मिट्टी में हानिकारक औद्योगिक कचरे को समाप्त करके मृदा संरक्षण किया जा सकता है।

अपशिष्ट प्रबंधन

अपशिष्ट प्रबंधन निम्नलिखित गतिविधियों का समूह है :

* कचरे का संग्रह, ढुलाई,प्रशोधन व निपटान
* उत्पादन का नियंत्रण, देखरेख व व्यवस्थापन, अपशिष्ट पदार्थों का संग्रह, ढुलाई, प्रशोधन व निपटान ; और
* प्रक्रिया में संशोधन, पुनः उपयोग व पुनर्चक्रण द्वारा अपशिष्ट पदार्थ की रोकथाम

खासकर विकासशील देशों एवं भीड़भाड़ वाले इलाकों में रोजाना बड़ी मात्रा में कचरा सड़कों पर फेंका जाता है इससे विभिन्न भयानक बीमारियों के साथ-साथ मृदा प्रदूषण भी हो सकता है। हम विभिन्न टेक्नीक्स जैसे 3 आर का विकल्प चुन सकते हैं, जैसे पुन: उपयोग, पुनः चक्रण एवं पुनः परिष्करण।

जन जागरूकता

इसके अलावा, प्रत्येक व्यक्ति को इस बात से अवगत कराना चाहिए कि वे पर्यावरण को कैसे प्रदूषित कर रहे हैं और पर्यावरण संरक्षण को लागू करने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं।

प्रदूषण नियंत्रण

हमें उन विषाक्त यौगिक पदार्थों पर नजर रखने की आवश्यकता है जो वातावरण को प्रदूषित करते हैं। हमें उत्सर्जन के कई रूपों को कम करने के लिए पर्यावरणीय रूप से स्थायी तरीकों को अपनाने की जरूरत है, जैसे कि कचरे को खत्म करना, बिजली की बचत करना, उर्वरकों, कीटनाशकों तथा कीटनाशकों के अनावश्यक उपयोग को सीमित करना एवं ऊर्जा-कुशल उपकरणों का उपयोग करना आदि।

पर्यावरण संरक्षण कैसे करें?

यहाँ पर्यावरण संरक्षण के कुछ तरीके नीचे दिए गए हैं:

* वनों की कटाई को रोका जाना चाहिए।
* प्राकृतिक नॉन-रिन्यूएबल रिसोर्सेज का उचित उपयोग किया जाना चाहिए।
* हर साल, हम जंगल की आग के कारण बड़ी संख्या में वन जीवन खो देते हैं। हमें इसका समाधान खोजना होगा।
* एफोरेस्टेशन पर्यावरण के संरक्षण का सबसे अच्छा तरीका है।
* जन जागरूकता पैदा करें। अधिक से अधिक अपने आस-पास के लोगों को इस पहल को लागू करने के लिए प्रेरित करें।
* प्रदूषण और जनसंख्या को नियंत्रित करें।
* पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली अपनाएं।
* वेस्ट मैनेजमेंट टेक्नीक्स को अपनाएं।
* विनाश के कगार पर मौजूद प्रजातियों को बचाया जाना चाहिए।

स्वच्छता

श्रीमती लिंडा जोसफिन,
सहायक

स्वच्छता एक क्रिया है जिससे हमारा शरीर, दिमाग, कपड़े, घर, आस पास एवं कार्यक्षेत्र साफ एवं शुद्ध रहते है। हमारे मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के लिए साफ – सफाई बेहद जरुरी है। अपने आस पास के क्षेत्रों तथा पर्यावरण की सफाई सामाजिक और बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता से रहना अत्यंत आवश्यक है।

स्वच्छता से हमारा आत्म – विश्वास बढ़ता है और दूसरों का भी हम पर भरोसा बनता है। यह एक अच्छी आदत है जो हमें हमेशा खुश रखेगी। यह हमें समाज में बहुत गौरान्वित महसूस कराएगी। स्वच्छता एक ऐसा कार्य नहीं है, जो पैसा कमाने के लिए किया जाए बल्कि, यह एक अच्छी आदत है जिसे हमें अच्छे स्वास्थ्य एवं स्वस्थ जीवन के लिए अपनाना चाहिए। इसे एक बड़ी सामाजिक जिम्मेदारी के रुप में हर एक को अनुकरण करना चाहिए।

जीवन में स्वच्छता बनाए रखने से लाभ

स्वच्छता से हमे रहने के लिए अच्छी जगह मिलती है, सांस लेने के लिए साफ हवा मिलती है, पीने के लिए साफ पानी मिलता है। हमारे आस – पास किसी भी प्रकार की दुर्गंद नहीं फैलती। हम साफ सफाई से रहेंगे तो समाज में हमारा गौरव बढ़ेगा। हम अपने गली मोहल्ले को साफ रखेंगे तो बीमारियां एवं मच्छर नहीं होंगे।

अगर हम अपने इलाके को स्वच्छ रखेंगे तो हमारे यहां दूसरे लोग आने लगेंगे। इसी प्रकार हम अपने देश को स्वच्छ रखेंगे तो विदेश में हमारे देश का गौरव बढ़ेगा। गाँवो में भी आजकल लोग अपने जानवरों को स्वच्छ रखते है। उनकी रहने की जगह की साफ सफाई अच्छे से करते हैं। इससे बीमारियों से बचाव होता है। हम देखते हे कि साफ – सफाई रखने वाले लोग कम बीमार पड़ते है, यदि आप अपने घर को साफ सुथरा रखेंगे तो आपके घर से बीमारियां कोसो दूर रहेगी. पैसो की बचत, जिस घर में बीमारियां नहीं होती वह पर पैसो की भी बचत होती है.

कैसे स्वच्छता से रहें

हम सभी को साफ सफाई बहुत पसंद होती है लेकिन जाने अनजाने में अपने घर को छोड़कर अन्य जगहों पर यूं ही गंदगी फैला देते है जिसका अंदाजा हमे नही होता है और न ही हमे इस बात का अहसास होता है कि हम जो कुछ भी ऐसा कर रहे है क्या यह सही है या क्या हमें अपने घर को छोड़कर अन्य जगहों पर गंदगी फ़ैलाने का अधिकार मिला है। बिलकुल नहीं।

जब भी हम सब कही जाने अनजाने में गंदगी या कचरा फैलाते हैं तो हमारे दिमाग में यह बात भरी होती है कि यह तो मेरा घर नहीं है। इसलिए हम पूरे आज़ादी के साथ कोई भी कचरा जहाँ तहाँ फेंक देते है जो कि बहुत ही गलत है। यदि हम पूरी दुनिया में जहाँ भी कहीं आते जाते हों उस स्थान को अपना घर मानें तो निश्चित ही हम अपने घर को चाहकर गंदा नहीं करेगे यानी हमारे दिमाग के मानने की वजह से हम कहीं भी गंदगी यूँ ही फैला देते हैं। इसलिए सबसे पहले अपनी सोच बदलनी चाहिए यह दुनिया फिर अपने आप स्वच्छ हो जाएगी।

स्वच्छता ही सेवा अभियान (एसएचएस) की महत्वपूर्ण बातें

- हर वर्ष 15 सितंबर से 2 अक्तूबर तक मनाया जाता है। स्वच्छता ही सेवा (एसएचएस), भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के तहत पेयजल एवं स्वच्छता विभाग द्वारा कार्यान्वित किया जाता है। इसे 15 सितंबर 2018 को पूरे देश में लॉन्च किया गया था।
- स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा 2014 में शुरू किया गया एक अभियान है जिसका उद्देश्य खुले में शौच को खत्म करना और ठोस कचरे के प्रबंधन में सुधार करना है।
- निर्मल भारत अभियान जिसे 2009 में आरंभ किया गया था, को स्वच्छ भारत मिशन में पुनर्गठित किया गया है।
- इसका उद्देश्य पूरे देश में उच्च स्तर की स्वच्छता सुनिश्चित करना है जो राष्ट्रपिता 'महात्मा गांधी' का सपना था।
- हम वर्तमान में अभियान के दूसरे चरण में हैं जिसकी समय अवधि 2020-21 से 2024-25 है।

- इससे पहले स्वच्छ भारत अभियान का पहला चरण अक्तूबर 2019 तक चला था।
- शौचालयों के निर्माण के माध्यम से महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में "ओडीएफ" (खुले में शौच से मुक्त) भारत को प्राप्त करना है।

अभियान के पहले चरण के मुख्य उद्देश्य हैं :

- स्वच्छता प्रथाओं के बारे में जागरूकता पैदा करना।
- स्वच्छता प्रथाओं के बारे में व्यवहार परिवर्तन लाने के लिए
- मैला ढोने की प्रथा का उन्मूलन
- स्थानीय स्तर पर क्षमता निर्माण।

अभियान के दूसरे चरण का उद्देश्य

खुले में शौच मुक्त स्थिति को बनाए रखना और ठोस और तरल कचरे के प्रबंधन में सुधार करना है, साथ ही सफाई कर्मचारियों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए भी काम करना है। शहरी-शहरी क्षेत्रों में "एसबीएम-शहरी" आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा किया जाता है। स्वच्छता ही सेवा अभियान का महत्व

* यह गांवों की दृश्य स्वच्छता में सुधार करता है।
* इसने अपशिष्ट संग्रह और पृथक्करण शेड के निर्माण का नेतृत्व किया।
* प्लास्टिक जैसे गैर-बायोडिग्रेडेबल कचरे के घर-घर संग्रह को प्रोत्साहित किया जाता है।
* एसयूपी (सिंगल यूज प्लास्टिक) पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।
* अधिकांश प्रमुख स्थानों पर "कूड़ा नहीं फेंकने" के दृश्य संकेत दिखाई दे रहे हैं, जो जनता को स्वच्छता बनाए रखने के कर्तव्य को सिखाता है।

स्वच्छता ही सेवा एक महान पहल है जिसका उद्देश्य ग्रामीण भारत में स्वच्छता के महत्व के बारे में व्यापक जागरूकता पैदा करना है। हालाँकि, कचरे के पुनर्चक्रण के तरीके में और अधिक किए जाने की आवश्यकता है, जिसके लिए न केवल अधिक धन की आवश्यकता है, बल्कि स्थानीय इकाइयों में नवीनतम और आधुनिक तकनीक को अपनाने की भी आवश्यकता है।

A DIVE INTO FOOT HEALTH

Smt.Anjana Thangarajan,
Young Professional HR Generalist

We are careful to take care of most parts of our bodies, from the essential care of our hearts, muscles and joints to the more superficial hair and nail care. However, many people tend to neglect their feet.

Healthy feet are vital for mobility. Loss of mobility can have a major psychological impact on an individual as there is are probabilities of loss of independence, loss of normal roles such as parenting or employment, and loss of confidence.”

As keeping feet healthy should be part of the daily routine, some of the measures compiled for up keeping foot health are as follows.

General Care:

- Wash your feet daily with soap and lukewarm water.
- Trim your toenails straight across and not too short.
- Apply moisturizers to prevent harmful bacteria infections through any cracks.

- Foot pain should not be seen as an inevitable part of ageing. In case of any pain persisting over 24 hours, its best advised to consult a medical professional.
- Stretch your feet as they help to treat - and prevent - foot pain. Find more such stretches in the following website -https://www.medicalnewstoday.com/articles/320964#for-strength

Footwear:

- Wearing properly fitted comfortable footwear. Many people have one foot that's larger than the other, and if this is true for you, remember to fit your shoes to your larger foot.
- Those who will be on their feet all day need to have shoes with proper cushioning and traction. Gel inserts are highly recommended, and it is best advised to take breaks to rest the feet periodically throughout the day.
- If finding the right shoes to support your feet is a struggle, there is always the option of orthotics (avoid if you have tight calves).
- Don't share shoes/pedicure apparatus.
- Avoid slippers as you age (or even from now) as they can become sloppy, are unsupportive, and run the risk of tripping and falling over.
- Consider wearing socks made of moisture-absorbing material in case of sweat due to prolonged footwear use or change the socks in between activities.
- On shopping for new shoes, go in the afternoon or evening when your feet are a little bigger as feet tend to gradually widen as the day goes on.

Miscellaneous:

- Don't hide discoloured nails with polish. Let them breathe and treat the underlying issue.
- Don't shave calluses. This can cause serious damage to your foot, especially if you have diabetes or poor circulation. Instead, coat such areas with a thin layer of Vaseline or anti-chafing balms until the visit with concerned medical professional.
- Don't perform "DIY surgery" on an ingrown nail.
- Maintain a Healthy Weight – Being overweight can put additional pressure on your feet, leading to foot pain and discomfort.
- If you do end up with the dreaded itch, try a Listerine soak.
- Avoid fish spa for feet as there is always a risk of spreading infections since the fishes themselves are not sanitized.
- Going barefoot at home may seem logical but walking barefoot can increase the chances of developing cracks in the feet depending on the flooring of the house.

In addition to the measures provided above, it is also necessary to regularly check the feet along with general health check-ups and especially consult the concerned medical professional in case of any persistent pain/injury. With the above precautions, one can most certainly avoid most foot related complications/diseases.

கைதட்டல்

- **Smt. Jayashakti, MTS**

கைதட்டல் மிகப்பிடிக்கும்..!

ஆம் கூட்டத்தில் ஒரு கைதட்டல் என்ன செய்துவிட்டு போய்விடப்போகிறது

ஒரு கைதட்டல்
அமைதியாய் கவனிக்கையில் அடிக்கோடிட்டு காட்டிவிடும்.

ஒரு கைதட்டல்
அடுத்தவரையும் கவனிக்கச் சொல்லிவிடும்.

ஒரு கைதட்டல்
அடுத்தடுத்து அரவணைத்து எழச்செய்திடும்.

ஒரு கைதட்டல்
சத்தத்தையே சங்கீதமாக்கி விடும்.

ஒரு கைதட்டல்
பேரன்பை முதலில் வெளிப்படுத்தி விடும்.

ஒரு கைதட்டல்
பெருமிதமும் விடாமுயற்ச்சியும் தந்துவிடும்.

மொத்தத்தில் கை தட்டுபவரையும்
கௌரவபடுத்தி விடும்
ஒரு கைதட்டல்.!

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड

हमारे राष्ट्र की सुरक्षा और भारतीय रक्षा बलों को अत्याधुनिक कवच समाधान प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड

पंजीकृत कार्यालय

भारी वाहन निर्माणी मार्ग, भक्त वत्सल पुरम,
आवडी, चेन्नई-600054. तमिलनाडु. भारत.
दूरभाष: 044-2638 3601

@avani_pr @official.avani.pr @avnl.pr